# 12

# दिल तक जाना

## ( 5:21-48 )

धार्मिकता पाप के स्पष्ट कार्य से आगे बढ़कर उस विचार की बात करती है जो ऐसे कार्य से पहले आता है (12:35; 15:18-20)। यह न केवल स्पष्ट आज्ञा को मानती है बल्कि उस आज्ञा के पीछे की सोच को भी मिला लेती है। इस अर्थ में यीशु वास्तव में शास्त्रियों और फरीसियों से कठोर था। वह अपने चेलों से राज्य के अपने कामों को मन के राज्य से छुड़वाना चाहता था।

आयत 20 में उसकी बहुत ऊंची बात पहाड़ी उपदेश के शेष भाग का पूर्वानुमान और संक्षेप दोनों है। अपने सामने इकट्ठा हुई लोगों की भीड़ के साथ साथ अपने चेलों को सिखाते हुए यीशु ने व्यवस्था के बारे में दूसरों की बातों और व्यवस्था की वास्तविक मंशा में छह अन्तर बताए। उसने क्रोध (5:21-26), व्यभिचार (5:27-30), तलाक (5:31, 32), शपथ खाने (5:33-37), बदला लेने (5:38-42), और शत्रुओं के लिए प्रेम (5:43-48) पर बात की। उसके उदाहरण यह समझाने के लिए तैयार किए गए थे कि लोग व्यवस्था की बातों को मानने के बावजूद उसकी भावना की उपेक्षा कर रहे हो सकते हैं।

### क्रोध और हत्या के सम्बन्ध में (5:21-26)

**[21]''तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि 'हत्या न करना,' और 'जो कोई हत्या करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।' [22]परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे 'अरे मूर्ख' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा। [23]इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, [24]और जाकर पहिले अपने भाई से मेल कर और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा। [25]जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही में है, उससे शीघ्र मेल मिलाप कर ले कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे, और हाकिम तुझे सिपाही को सौप दे, और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए। [26]मैं तुझ से सच कहता हूं कि जब तक तू कौड़ी-कौड़ी भर न दे तब तक वहां से छूटने न पाएगा।''**

**आयत 21.** यीशु ने पहले अन्तर का परिचय ''**तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था**'' कहते हुए दिया, जो उन यहूदी परम्पराओं की बात थी जो व्यवस्था में से निकली थीं और सदियों से इकट्ठी होती रही थीं। उसने इन भिन्नताओं का आरम्भ ''लिखा है'' कहते हुए नहीं किया, जैसे उसने पवित्र शास्त्र की स्पष्ट बात करते हुए किया था। इसके विपरीत

उसने मौखिक शिक्षाओं और यहूदियों की परम्पराओं की ओर ध्यान दिलाते हुए ''तुम सुन चुके हो कि कहा गया था'' (NIV) वाक्यांश का इस्तेमाल बार-बार किया (5:27, 33, 38, 43)। 5:31 में इस वाक्यांश को ''कहा गया था'' में संक्षिप्त किया गया है।

यीशु द्वारा इस्तेमाल की गई यह भाषा बहस में भाग लेते हुए ''रब्बियों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला यन्त्र था।''[1] वह रब्बियों और शास्त्रियों की व्याख्याओं को व्यवस्था के मूल अर्थ से भिन्न कर रहा था। विद्वानों की तरह उस समय के यहूदी धर्म गुरु आम तौर पर अपने पुराने बड़े धार्मिक अगुओं का हवाला देते थे। दूसरी ओर यीशु ''उनके शास्त्रियों के समान नहीं परन्तु अधिकारी के समान'' व्यक्तिगत बात करता था (7:29)। केवल एक ही कथन से कि ''परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं'' उसने उनकी चलाकी और व्यवस्था के दुरुपयोग को खत्म कर दिया।

''पूर्वकाल के'' सिखाने वाले कहते थे, '' **'हत्या न करना,' और 'जो कोई हत्या करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।'** '' यीशु का पहला उद्धरण दस आज्ञाओं में से था (निर्गमन 20:13; व्यवस्थाविवरण 5:17), जिसे पूर्वकाल के लोग भली भांति जानते थे। दूसरा उद्धरण यहूदी परम्परा को दिखाता है जिसमें कहा जाता था कि हत्या करने वाला ''दण्ड के योग्य'' (NIV) होगा या उस पर अदालत में मुकदमा चलाया जा सकता है (व्यवस्थाविवरण 16:18; 17:8-13)। व्यवस्था में हत्या का दण्ड मृत्यु बताया गया था (निर्गमन 21:12; लैव्यव्यवस्था 24:21; गिनती 35:16-21, 30, 31)।

स्पष्टतया एक अर्थ में यहूदी अगुओं ने दस आज्ञाओं की छठी आज्ञा विचार या व्यवहार की अनदेखी करके इसे केवल शारीरिक कार्य में बदल दिया था। इस व्याख्या के अनुसार, अपने आप में धार्मिक व्यवस्था को मानने वाला व्यक्ति मन में किसी व्यक्ति की हत्या कर लेने के बावजूद जब तक वास्तव में किसी का प्राण नहीं लेता तब तक अपने आप में सन्तुष्ट हो सकता था। हत्यारे मन का बचाव करते हुए वह अपने आप से कह सकता था, ''मैंने व्यवस्था को माना है।''

**आयत 22.** ऐसी सोच के विपरीत, यीशु ने कहा, ''**परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।**'' हत्या के पाप में केवल शारीरिक कार्य ही नहीं बल्कि मन की स्थिति और इरादा भी था। यूहन्ना ने ऐसी ही बात कही: ''जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता'' (1 यूहन्ना 3:15)।

''बिना कारण'' (देखें KJV) वाक्यांश कुछ यूनानी हस्तलिपियों में ''क्रोध'' में सुधार करते हुए स्पष्टतया बाद के किसी प्रतिलिपी बनाने वाले द्वारा जोड़ा गया था। वचन में यह जोड़ यीशु द्वारा दिए गए कठोर निर्णय को कोमल बनाता है। किसी भाई के साथ क्रोधित होने का कारण कई बार आसानी से पता चल जाता है, पर यीशु ने अपने अन्तर में इसके लिए कोई सफ़ाई नहीं दी।

नये नियम में क्रोध की दो किस्मों का वर्णन है। यूनानी शब्द *thumos* क्रोध की वह किस्म है जो एक दम से भड़क उठती है और वैसे ही फुर्ती से गायब हो जाती है। यूनानी शब्द *orgē* वह किस्म है जो देर तक रहती अर्थात वास्तविक या काल्पनिक घावों के ऊपर उपचार और चिन्तन करती है। स्पष्टतया यीशु इस दूसरी किस्म की ही मनाही कर रहा था-यानी वह किस्म जो क्षमा नहीं करेगी या भूलेगी नहीं। यह बदला लेने के तरीके की तलाश करते हुए बना रहता है। इस प्रकार का क्रोध परमेश्वर की धार्मिकता का काम नहीं करता (याकूब 1:20)। ''क्रोध, रोष,

वैरभाव'' के साथ इसे टाल देना आवश्यक है (कुलुस्सियों 3:8)। पौलुस ने मसीही व्यक्ति से ऐसे क्रोध को सोने के लिए बिस्तर तक ले जाने का इनकार करने का आग्रह किया (इफिसियों 4:26)।

यीशु ने आगे कहा, ''**जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे 'अरे मूर्ख' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा।**'' उसने तिरस्कारपूर्ण अभिव्यक्तियों के विरुद्ध चेतावनी दी जिससे दूसरे व्यक्ति की बदनामी हो। 2 राजाओं 2:23, 24 में एलीशा के उदाहरण और रब्बियों की शिक्षाओं से लेते हुए, डोनल्ड ए. हैग्नर ने लिखा, ''नामों से जुड़े महत्व के कारण बाइबल के समयों में नाम लेना बहुत अधिक गम्भीर बात थी।''[2] माइकल जे. विल्किंस ने जोड़ा है, ''नाम लेना यहूदी संस्कृति में अत्यधिक अपमानजनक बात थी, क्योंकि किसी के नाम के साथ जुड़े महत्व के कारण उससे यह निकल जाता था।''[3]

''राका'' (KJV; NIV) एक अरामी अभिव्यक्ति थी, और इसका सही सही अनुवाद पता नहीं है। ''राका'' की व्याख्या ''किसी काम का नहीं'' (NASB), ''मूर्ख'' (फिलिप्स) और ''बिना दिमाग के मूर्ख'' (AB) के रूप में अलग अलग दी जाती है। जॉन राइट ने कहा है कि ''राका अत्यधिक घृणा में किसी दूसरे को तुच्छ जानने वाले व्यक्ति द्वारा इस्तेमाल किया जाता'' था ''जो इब्रानी लेखकों में बहुत सामान्य था, और बच्चे बच्चे के मुंह में बहुत आम था।''[4] यह न केवल शब्द के द्वारा बल्कि लहज़े में भी घमण्डपूर्ण तिरस्कार को दिखाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था, जिसे परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है, उस का अपमान करना मसीह के विपरीत होने जितना पाप है (याकूब 3:8-10; 1 यूहन्ना 4:20)। निश्चय ही ''दूसरे लोगों के प्रति'' अपने ''विचारों'' के साथ साथ कुछ शब्दों को ''जिनसे वे बनते हैं'' सौंपना मसीही व्यक्ति के लिए ''परमेश्वर की बारीक जांच'' पर निर्भर रहना है।[5]

''अरे मूर्ख'' के लिए शब्द (*mōros*) जिससे अंग्रेज़ी शब्द ''moron'' (''मंदबुद्धि'') निकला जिसका अर्थ है ''बिना कारण वाला'' या ''जो नैतिक रूप में व्यर्थ है'' अर्थात विश्वासघाती, बदमाश। इसमें दुर्भावना का संकेत है। ऐसा न्याय करना केवल परमेश्वर का काम है, क्योंकि मन को केवल वही जानता है। इसमें मानसिक योग्यता की बात नहीं है बल्कि यह किसी के नैतिक चरित्र पर कलंक लगा देता है। यह किसी के अच्छे नाम से लेकर उसे व्यर्थ, अनैतिक व्यक्ति का नाम दे देना है।

यीशु द्वारा न्याय के लिए इस्तेमाल किए गए तीन शब्द, और उनकी कठोरता बढ़ते क्रम में हो सकती है। (1) क्रोध के सम्बन्ध में व्यक्ति या तो ''कचहरी'' के सामने जाएगा, या ''न्याय'' का दोषी होगा (NIV)। हत्या के सम्बन्ध में आयत 21 में इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ। यह स्थानीय अदालत की बात हो सकती है। जिसमें यीशु की बात का अतिश्योक्ति होना आवश्यक होगा। आखिर, क्रोध के लिए कितने लोगों के ऊपर मुकदमा चला होगा? एक और सम्भावना यह है कि ''दिमाग में परमेश्वर का न्याय'' है।[6]

(2) ''राका'' के इस्तेमाल के सम्बन्ध में, ''महासभा'' का सामना करना पड़ेगा। यह शब्द स्थानीय अदालत के लिए हो सकता है (10:17; मरकुस 13:9), परन्तु आम तौर पर यह यरूशलेम में इकट्ठा होने वाली संहेद्रिन को कहा जाता था। यहूदी अदालत में प्रधान याजकों,

प्राचीनों और शास्त्रियों सहित प्रभावशाली आदमी होते थे।

(3) ''मूर्ख'' शब्द (*mōros*)। ''भयानक नरक'' में परमेश्वर के न्याय का संकेत था। ''नरक'' का अनुवाद यूनानी भाषा के शब्द *गेहन्ना* से किया गया है। गेहन्ना की आकृति यरूशलेम के दक्षिण की ओर हिन्नोम की तराई से मिलती है। यहूदी लोगों के मन में इस घृणित स्थान में मूर्तियों के देवता मोलेक के सामने चढ़ाई जाने वाले बच्चों के बलिदान जैसी घिनौनी बातें आती थीं (2 इतिहास 28:3; 33:6; यिर्मयाह 32:35)। राजा योशिय्याह ने इस स्थान को अशुद्ध कर दिया था (2 राजाओं 23:10), बाद में यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी कि यह ''घात की तराई'' का स्थान बन जाएगा जहां बाबुल के लोग यहूदिया के शवों को फैंकेंगे (यिर्मयाह 7:31-33; 19:6)। हिन्नोम की तराई बदबूदार स्थान अर्थात कूड़े का ढेर बन गई, जहां बेकार चीज़ों को फैंक दिया जाता था।[7]

दोनों नियमों के अन्तराल के बीच यह स्थान अनन्त, आय के दण्ड का प्रतीक वाला नरक बन गया। हिन्नोम की तराई के साथ आग की बात तीन दिशाओं से उठी हो सकती है: मोलेक सम्प्रदाय में बाद में कूड़े के ढेर से निकलते रहने वाली आग की परम्परा और पुराने नियम के वचन जो भयानक न्याय की बात करते हैं (यशायाह 30:33; 33:14; 66:24)।

यीशु ने अपने चेलों को बताया कि दुर्भावना भरी बातों या कामों से भाई या बहन को नष्ट करने वाले व्यक्ति के लिए कठोर दण्ड इससे बढ़कर कोई नहीं है। यीशु द्वारा दी गई अन्तिम चेतावनी में संकेत था कि ''दोषियों को दूसरों पर झूठे चेले होने का आरोप लगाने वालों को स्वयं अनन्तकाल में वैसा दण्ड मिलेगा।''[8]

**आयतें 23, 24.** सामान्य नियम बताने के बाद यीशु ने दो प्रासंगिकताएं बताईं। पहली प्रासंगिकता में उसने परमेश्वर के सामने आराधना के लिए जाने से पहले अपने **भाई** के साथ **मेल** करने के महत्व पर ज़ोर दिया। उसके चेलों को न केवल किसी भाई के प्रति अपने मन में बुरे विचार रखने या इसके बचन बल्कि उसे और उसे हो सकने वाली किसी भी समस्या को सुधारने के लिए सकारात्मक कदम ही उठाने आवश्यक हैं। यहां मेल करने की पहल ठोकर खिलाने वाले पर पाई गई है, जबकि मत्ती 18:15-17 में यह उस पर पाई गई है जिसे ठोकर लगती है। यदि लोगों को ऐसी समस्याओं का पता हो और वे कुछ करें न, आम तौर पर वे दोषी ठहरते हैं।

यीशु की अगुआई यरूशलेम के मन्दिर में परमेश्वर को **भेंट** की जाने वाली **भेंट** के यहूदी प्रचलन है। व्यवस्था के अधीन किए जाने वाले बलिदान वे माध्यम हैं जिनके द्वारा एक पापी व्यक्ति अपने और परमेश्वर के बीच टूटे सम्बन्ध को सुधारता था। बलिदान अपने आप में पाप का प्रायश्चित नहीं हो सकते थे (देखें इब्रानियों 10:1-4); परन्तु सच्चे पश्चात्ताप और व्यक्ति के पाप से हो सकने वाले परिणामों को सुधारने के गम्भीर प्रयास में उनका चढ़ाया जाना आवश्यक था। यीशु स्पष्ट कर रहा था कि औपचारिक भेंटें नैतिक असफलताओं का विकल्प नहीं हो सकतीं।

**अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर** को जोड़ने में कुछ अतिश्योक्ति हो सकती है। ''निश्चय ही वेदी के व्यस्त क्षेत्र में अनाज की भेंट अकेले छोड़कर जाना सम्भव नहीं है, कबूतरों के जोड़े या जीवित बकरी को छोड़ना तो दूर की बात है!''[9] इसके अलावा, हो सकता है कि जिस भाई का पाप किया गया हो वह उस समय में यरूशलेम में न हो, यीशु ने परमेश्वर के साथ सही होने के लिए अपने भाई के साथ मेल करने की आवश्यकता पर बल देने के लिए

अतिश्योक्ति का इस्तेमाल किया। यहूदी परम्परा का कहना था कि ''व्यक्ति और उसके साथी के बीच अपराधों के लिए, प्रायश्चित का दिन हर्जाना भरना है, केवल तभी यदि वह व्यक्ति अपने मित्र की सुइच्छा फिर से मांगे।''[10] एक आरम्भिक मसीही लेख ने *द डिडेक्* में कहा गया है, ''कोई भी जिसका किसी साथी के साथ झगड़ा हुआ हो तब तक तुम्हारे साथ [सभा में] न मिले जब तक उनमें सुलह न हो, ताकि तुम्हारा बलिदान अशुद्ध न हो।''[11]

**आयतें 25, 26.** यीशु द्वारा इस्तेमाल की गई दूसरी प्रासंगिकता में वह स्थिति दिखाई गई जिसमें वह उस पक्ष ने जिसका अपराध हुआ था, वास्तव में उस व्यक्ति के विरुद्ध जिसने उसका अपराध किया था कानूनी कार्यवाही आरम्भ कर दी। यीशु ने यह सिफ़ारिश की कि अपराध करने वाला मामले को दोनों के अदालत में पहुंचने से पहले निपटा ले: ''**जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही में है, उससे शीघ्र मेल मिलाप कर ले।**'' स्थिति की गम्भीरता पर विचार किया गया है, क्योंकि बिना मेल किए मामला बिगड़ ही सकता था। विरोधी मुद्दई [अपराध करने वाले को] **हाकिम को सौंपे** देगा। दोषी साबित होने के बाद उसे **सिपाही को सौंप** दिया जाना था और अन्त में उसे **बन्दीग्रह में डाल दिया जाए**। परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपने सब नगरों में ''न्यायी'' और ''सरदार'' नियुक्त करने का निर्देश दिया (व्यवस्थाविवरण 16:18)। सरदार न्यायियों द्वारा दिए गए दण्ड को अमल में लाते थे।

इस दृश्य में खतरे की बात आर्थिक है: ''**मैं तुझ से सच कहता हूं कि जब तक तू कौड़ी-कौड़ी भर न दे तब तक वहां से छूटने न पाएगा।**'' ''कौड़ी कौड़ी'' (*kodrantēs*) थी। सबसे छोटे रोमी सिक्के *क्वाद्रंस* की बात है। इसकी कीमत विधवा की ''दो दमड़ियों'' जितनी थी (मरकुस 12:42; KJV)। प्राचीन जगत में कर्ज के बदले कैद *अन्यजातियों* में आम बात थी (18:34; लूका 12:57-59)। यहूदी पृष्ठभूमि में कर्जदारों को कैद में डालने की अन्यजातियों की क्रूरता की बात की थी, जिसमें उनके पास अपना कर्ज़ चुकाने के लिए पैसा कमाने का कोई और तरीका नहीं होता था, पूरा कर्ज चुकाने के महत्व को दिखाने का एक तरीका था। इससे दिखाए गए न्याय के सम्बन्ध में सुनने वाले के मन में चेतावनी डालना असरदायक होता था।[12]

## व्यभिचार के सम्बन्ध में (5:27-30)

**[27]''तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'व्यभिचार न करना।' [28]परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, यदि कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका। [29]यदि तेरी दाहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नष्ट हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। [30]यदि तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसको काट कर फेंक दे, क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नष्ट हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।''**

**आयत 27.** यीशु ने इस यहूदी शिक्षा का समर्थन किया कि व्यभिचार का शारीरिक काम पाप पूर्ण है। उसके सुनने वाले सातवीं आज्ञा से परिचित होंगे कि ''**तू व्यभिचार न करना**'' (निर्गमन 20:14; व्यवस्थाविवरण 5:18)। मूसा की व्यवस्था के अधीन व्यभिचार पाप था, और

मसीह की व्यवस्था के अधीन भी यह पाप है। पुरानी वाचा में यह कार्य शारीरिक मृत्यु के दण्ड के योग्य था (लैव्यव्यवस्था 20:10; व्यवस्थाविवरण 22:22), और नई वाचा के अधीन यह आत्मिक मृत्यु के दण्ड के योग्य है (1 कुरिन्थियों 6:9; प्रकाशितवाक्य 21:8; 22:15)।

**आयत 28.** परन्तु यीशु ने व्यभिचार के विरुद्ध आज्ञा को पुरानी वाचा के दण्ड से आगे बड़ा दिया: ''**परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, यदि कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।**'' बेशक कुछ यहूदी रब्बी शारीरिक कार्य को पाप मानते थे परन्तु वासना की अनुमति देते थे, जबकि यीशु ने घोषणा की कि वह विचार भी जिससे यह निकलती है, पाप है।[13]

अन्य यहूदी गुरु वासना का वैसे ही विरोध करते थे, जैसे यीशु ने किया। उदाहरण के लिए, बाद के एक स्रोत में कहा गया है, ''यह मत समझो कि जो अपने शरीर के साथ अपराध करता है केवल वही व्यभिचारी है। यदि कोई अपनी आंख से व्यभिचार करता है तो वह भी व्यभिचारी है।''[14] यह चेतावनी अपोक्रिफा (बाइबल की अप्रामाणिक पुस्तकें-अनुवादक) में मिलती है: ''सुन्दर स्त्री से अपनी दृष्टि हटा लो और पराई स्त्री को मत निहारो। स्त्री के सौन्दर्य के कारण बहुतों का विनाश हुआ है। वासना उसके कारण आग की तरह भड़क उठती है।''[15]

अन्य सभी पापों की तरह वासना के पाप को भी पैदा होते ही मार देना आवश्यक है। कामुक दृष्टि कामुक कार्य का कारण बन सकती है। ''कुदृष्टि'' के लिए इस्तेमाल हुआ यूनानी शब्द जान बूझकर घूरते रहने अर्थात देखने की निरन्तर प्रक्रिया का संकेत देता है। इसमें कामुक नज़र, ख्यालों में, मन में अवैध सम्बन्धों में मानसिक रूप में लगे होने का संकेत है (देखें 2 पतरस 2:14; 1 यूहन्ना 2:16)। यीशु किसी स्त्री के आकर्षण को पुरुष के निहारने को गलत नहीं कह रहा था, ''यहां स्त्री के लिए पुरुष की स्वाभाविक इच्छा को गलत नहीं, बल्कि उस स्त्री के लिए कामुक इच्छा को कहा गया है, जिस पर उसका कोई अधिकार नहीं है।''[16]

पुराने नियम में व्यभिचार का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण दाऊद के बतशेबा को नहाते हुए उसे कामुक दृष्टि से देखने से आरम्भ हुआ था (2 शमूएल 11:2-4)। निर्दोष अय्यूब ने एक बार पुष्टि की थी, ''मैं ने अपनी आंखों के विषय वाचा बान्धी है, फिर मैं किसी कुंवारी पर क्योंकर आंखें लगाऊं?'' (अय्यूब 31:1)। उसने आगे कहा कि उसने एक विवाहित स्त्री द्वारा फुसलाए जाने से अपने मन की रक्षा की और अपने आपको समझौता करने वाली परिस्थितियों में डलने से बचाए रखा (अय्यूब 31:9-12)।

यीशु के शब्दों का अर्थ था कि यह वासना मानसिक बलात्कार है। हमें अपनी सन्तुष्टि के लिए लोगों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, चाहे वह मानसिक रूप में हो या शारीरिक रूप में। सैक्स का दुरुपयोग हमें दिए गए परमेश्वर के दानों में से एक को बिगाड़ना है। सैक्स की अभिव्यक्ति के पूर्ण आनन्द को केवल इसके बारे में दी गई परमेश्वर की आज्ञाओं को मानकर ही पाया जा सकता है।

**आयतें 29, 30.** पाप को जड़ से ही खत्म कर देना आवश्यक है। यह इतनी गम्भीर बात है तो मानसिक व्यभिचार कैसे रोका जा सकता है? यीशु ने कहा, ''**यदि तेरी दाहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर फेंक दे।**'' रॉबर्ट एच. माउंस ने लिखा है कि ''यह विडम्बना ही है कि जिसे ठोकर से बचाने के लिए माना जाता है, *skandalon* बन जाती है जो व्यक्ति के लिए ठोकर का कारण बनती है।''[17]

कलीसिया के आरम्भिक दिनों में यीशु की इस बात को कई बार अक्षरश: लिया जाता था। इसी प्रकार, ''कलीसिया के आरम्भिक पिताओं'' में से एक ओरिगन (लगभग 185-254) के लिए कहा जाता है कि उसने मत्ती 19:12 में मसीह की शिक्षा के आधार पर अपने आपको परमेश्वर के राज्य के लिए नपुंसक बना लिया था।[18] परन्तु यीशु अपने अंग काटने की वकालत नहीं कर रहा था; वह तो अपनी बात को समझाने के लिए अतिश्योक्ति या अतियुक्ति का इस्तेमाल कर रहा था। 29 और 30 आयतों में वह मूल सर्जरी की आज्ञा नहीं दे रहा था, वह तो इस बात को कह रहा था कि उसके मानने वाले पाप के अपने जीवन को छोड़ दें। यह रूपक हावी होने वाली स्वाभाविक भावनाओं पर काबू पाने के लिए जो भी आवश्यक कदम उठाने आवश्यक हों उठाने की आवश्यकता पर ज़ोर देता है।[19]

यीशु ने यह भी कहा, **''यदि तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसको काट कर फेंक दे।''** ''आंख'' और ''हाथ'' दोनों के मामले में जिस अंग का उल्लेख है वह ''दाहिना'' ही है। दाहिने हाथ को अधिक प्रबल माना जाता है, इस कारण इसे पसंदीदा हाथ माना जाता था। यीशु द्वारा यही विशेष उपचार आंख के लिए भी दिया गया।

ज़ोर देने के लिए यीशु ने यह चेतावनी दो बार दी: ''तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नष्ट हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।'' मत्ती 18:8, 9 में यीशु ने यही बातें कहीं जिनमें न केवल हाथ और आंख भी शामिल किए गए बल्कि पांव भी मिलाए गए। उन आयतों में उसने निष्कर्ष निकाला, ''टुंडा या लंगडा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इस से भला है कि दो हाथ या दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए। ... काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इस से भला है कि दो आंख रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाए।'' जैक पी. लूईस को लगा कि ''आने वाले संसार में विकलांगताएं रहेंगी या नहीं पर रब्बियों की बहस के प्रकाश में अतिश्योक्ति वाली अतियुक्ति का अधिक संकेत है।''[20]

बाद में यीशु ने कहा कि हर पाप का आरम्भ मन से होता है (15:18-20)। मुख्य विचार प्रमुख हैं। मत्ती 5:28 में उसकी टिप्पणियां साबित करती हैं कि वासना की समस्या केवल स्त्री पर कुदृष्टि डालना ही नहीं। यह आंख की नहीं, बल्कि मन की समस्या है। वासना भरी नज़र से पाप नहीं होता, बल्कि पाप का अस्तित्व तो मन में पहले से है जो वासना भरी दृष्टि का कारण बनता है। यदि यीशु की आज्ञा को अक्षरश: लिया जाए तो केवल आंख निकालने या हाथ काटने के बजाय सिर को काट देना बेहतर होगा। दिमाग ही आंख और हाथ को चलाता है। यदि किसी की आंखें या हाथ उसे ठोकर खिलाएं तो उसे बुरे विचार और बुरी इच्छाओं को रोकने के लिए अपने दिमाग को सुधारना आवश्यक है।

## तलाक के बारे में (5:31, 32)

**31''यह भी कहा गया था, 'जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देना चाहे, उसे त्यागपत्र दे।' 32परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से तलाक दे, तो वह उस से व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है।''**

**आयत 31.** तलाक की बात करते हुए यीशु ने बार बार यहूदियों की कानूनी व्याख्याओं की बात की जिनमें व्यवस्था की भावना को नज़रअन्दाज़ किया गया है। विचाराधीन विशेष नियम व्यवस्थाविवरण 24:1–4 से लिया गया है:

> ''*यदि* कोई पुरुष किसी स्त्री को ब्याह ले, और उसके बाद उसमें लज्जा की बात पाकर उस से अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर से निकाल दे। और जब वह उसके घर से निकल जाए, तब दूसरे पुरुष की हो सकती है। परन्तु यदि वह उस दूसरे पुरुष को भी अप्रिय लगे, और वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर उसके हाथ में देकर उसे अपने घर से निकाल दे, वा वह दूसरा पुरुष जिस ने उसको अपनी स्त्री कर लिया हो मर जाए, *तो* उसका पहिला पति, जिस ने उसको निकाल दिया हो, उसके अशुद्ध होने के बाद उसे अपनी पत्नी न बनाने पाए क्योंकि यह यहोवा के सम्मुख घृणित बात है। इस प्रकार तू उस देश को जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है पापी न बनाना।''

यह वचन विस्तृत सशर्त वाक्य है। पहली आयतों में शर्तिया उपवाक्य (''यदि'' वाला भाग) और चौथी आयत में उपसंहार का वाक्य (''तो'' वाला भाग) है।[21] तलाक देने की *आज्ञा* नहीं है, बल्कि तलाक पर (जो पहले भी हो चुका था) एक नियम है। तलाकशुदा स्त्री जिसने पुनर्विवाह किया हो उसे उसका पहला पति नहीं रख सकता था। क्रिस्टोफर राइट के शब्दों का इस्तेमाल करें तो ''इस नियम का व्यावहारिक प्रभाव बेचारी स्त्री को विवाह के फुटबाल जैसा बनने से बचाना है, जिसे गैर जिम्मेदार पुरुषों के बीच कभी इधर और कभी उधर फैंका जाता है।''[22] इस वचन के सम्बन्ध में, यीशु ने कहा कि मूसा ने तलाक की *अनुमति दी* और यह कि उसने यह अनुमति इसलिए दी क्योंकि लोगों के मन कठोर हो चुके थे (19:8)।

यह बात की **''जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देना चाहे तो उसे त्याग पत्र दे''** चाहे यह व्यवस्थाविवरण 24:1 पर आधारित थी पर यह प्रत्यक्ष उद्धरण नहीं है। व्यवस्थाविवरण के पद में त्याग पत्र की कल्पना की गई है, जबकि यह बात तलाक देने को आज्ञा के रूप में दिखाती है (देखें 19:7)।

''त्याग पत्र'' को ''अलग करने का पत्र,'' ''निकालने का पत्र,'' ''कागज़,'' ''बर्खास्तगी का कागज़'' और ''छोड़ देने का पत्र'' भी कहा जाता था।[23] तलाकनामा की प्रथा पति को अपनी पत्नी को तैश में, उतावली में भेजने से रोकता था। यह पत्नी को व्यभिचारिणी के रूप में देखने से भी बचाता था और उसे किसी दूसरे पुरुष के साथ विवाह करने की छूट देता था।

पहली सदी के यहूदी धर्म में तलाक पुरुष का विशेषाधिकार था;[24] और पुरुष आम तौर पर ''हर एक कारण से'' (19:3) तलाकनामा दे देते, तो अपनी पत्नियों को तलाक देना आम तौर पर उचित समझते थे। जोसेफस ने लिखा है:

> जो किसी भी कारण से (और पुरुषों में ऐसे कई कारण पाए जाते हैं) अपनी पत्नी से तलाक लेने की इच्छा करे, वह उसे लिखित में आश्वासन दे कि वह इसके बाद उसे अपनी पत्नी के रूप में कभी इस्तेमाल नहीं करेगा; क्योंकि इस प्रकार से उसे किसी दूसरे पति से विवाह करने की छूट हो सकती है।[25]

परन्तु हर कोई इस सोच से सहमत नहीं था। रब्बियों की दो पाठशालाओं में ''लज्जा''– मूलतया ''किसी बात का नंगेज'' जिसका उल्लेख व्यवस्थाविवरण 24:1 में शब्द के अर्थ पर फोकस करते हुए इस मुद्दे पर गर्मा-गर्म बहस होती थी।[26] रब्बी शमई यह कहते हुए कि ''लज्जा'' निर्लजता ही थी, अधिक रूढ़िवादी था। परन्तु हो सकता है कि यह पूरी तरह से व्यभिचार न हो, क्योंकि दोषी पक्ष व्यवस्था के अनुसार, मृत्यु के दण्ड के अधीन आता होगा (लैव्यव्यवस्था 20:10–14; व्यवस्थाविवरण 22:22)। रब्बी हिलेल यह कहते हुए कि ''लज्जा'' मुख्यतया कोई भी बात थी जो पति को नापसन्द या चिढ़ाने वाली थी, ''चाहे उसने उसके बर्तन को गन्दा किया हो'' अधिक उदारवादी विचार रखता था।[27] जैसा कि उम्मीद है कि हिलेल का अधिक उदार विचार लोगों में अधिक प्रसिद्ध था।

**आयत 32.** यीशु ने संकेत दिया कि अपनी पत्नी को तलाक देने वाला व्यक्ति, उसे त्यागपत्र देने के बावजूद, उससे पाप करवाने के लिए जिम्मेदार है। उसने सीधा कहा, **''परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि जो कोई अपनी पत्नी को ... तलाक दे, तो वह उससे व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है।''** ''किसी भी कारण से'' तलाक देने को मुक्त होने से कहीं दूर यीशु ने कहा कि पति के लिए विवाह की अपनी वाचा के साथ वफ़ादार होना आवश्यक है।

शमई के अनुयायियों से बहुत मिलती-जुलती उसकी शिक्षा अपने समय की प्रथा से कठोर थी। उसका पूरा उद्देश्य परमेश्वर की मूल मंशा के लिए विवाह की पवित्रता और स्थायीत्व को बहाल करना था (उत्पत्ति 2:18–25; मलाकी 2:13–16; मत्ती 19:4–6, 9)। हैग्नर ने लिखा है, ''राज्य की धार्मिकता का मूल स्वभाव अदन की वाटिका के मानपदण्डों में वापस जाने की मांग करता है।''[28] डब्ल्यू. एफ़. अल्ब्राइट और सी. एस. मन ने यीशु को विवाह की वाचा के बांधने वाली प्रकृति में वापस जाने के रूप में दिखाया है:

> यीशु जिस बात पर ज़ोर दे रहा था वह विवाह का सिद्धांत अर्थात आधार है। सिद्धांत, तलाकशुदा स्त्री अभी भी अपने पति की पत्नी है, और अपनी पत्नी को तलाक देने वाला आदमी इस मान्यता पर कि वह फिर से विवाह करे, उसे व्यभिचारिणी बनाता है। जो आदमी तलाकशुदा स्त्री से विवाह करता है वह उसके व्यभिचार में तो भागीदार होता ही है साथ ही स्वयं भी अपराध करता है, क्योंकि कानूनी तौर पर चाहे न हो, सैद्धांतिक रूप तलाकशुदा पत्नी अभी भी अपने पहले पति से ब्याही हुई है।[29]

यीशु ने यह माना कि ऐसे हालात में तलाकशुदा स्त्री फिर से विवाह करेगी क्योंकि पहली सदी के उस समाज में अपने दम पर जीवित रहना अकेली स्त्री के लिए बहुत ही कठिन था।

परन्तु यीशु ने सामान्य नियम कि **''व्यभिचार के सिवाय''** (देखें 19:9) का अपवाद दिया। ''व्यभिचार'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द *porneia* से लिया गया है जिसका अनुवाद ''फोर्निकेशन'' (विवाहितों के बीच शारीरिक सम्बन्ध; KJV) ''विवाह में बेवफ़ाई'' (NIV) भी हुआ है। इस संदर्भ में इस शब्द का इस्तेमाल हर प्रकार के अवैध यौन सम्बन्ध को शामिल करने के लिए एक बड़ी छतरी के रूप में किया गया है। कहने का अभिप्राय यह है कि पुरुष अपनी पत्नी को तलाक देने का दोषी नहीं होगा यदि उसने व्यभिचार किया हो।[30] अपवाद की

यह बात पुरुषों को अपनी बेवफ़ा पत्नियों को तलाक देने की *अनुमति देती* थी पर उन्हें ऐसा करने की *आज्ञा* नहीं देती थी। शायद पुरुष की क्षमा के साथ मिलकर स्त्री के पश्चात्ताप से विवाह को बहाल करने का रास्ता मिल जाए। इसके विपरीत, रब्बियों की व्यवस्था के अनुसार, पुरुष के लिए अपनी निर्लज पत्नी को तलाक देना आवश्यक था, क्योंकि वह अशुद्ध मानी जाती थी।[31]

इस पद में और उसके समानान्तर आयतों में (19:1-12; मरकुस 10:1-12; लूका 16:18) यीशु तलाक के विरोध में शिक्षा दे रहा था। परन्तु यीशु ने कुछ विशेष बातों को जिन्हें 1 कुरिन्थियों 7 में पौलुस के द्वारा समझाया गया, स्पष्ट रूप में चर्चा या स्पष्ट नहीं हुआ।

## शपथों के बारे में (5:33-37)

**[33]"फिर तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था, 'झूठी शपथ न खाना परन्तु प्रभु के लिए अपनी शपथ को पूरी करना।' [34]परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि कभी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है, [35]न धरती की, क्योंकि वह उसके पांवों की चौकी है; न यरूशलेम की, क्योंकि वह महाराजा का नगर है। [36]अपने सिर की भी शपथ न खाना क्योंकि तू एक बाल को भी न उजला, न काला कर सकता है। [37]परन्तु तुम्हारी बात 'हां' की 'हां', या 'नहीं' की 'नहीं' हो; क्योंकि जो कुछ इससे अधिक होता है वह बुराई से होता है।"**

**आयत 33.** यीशु ने शपथों पर इस शिक्षा का परिचय आयत 21 में पाए जाने वाले पूरे भाग के साथ किया: **"तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था।"** पुराने नियम के किसी विशेष वचन से उद्धृत करने के बजाय उसने इस विषय पर इसकी शिक्षा को संक्षिप्त कर दिया: **"झूठी शपथ न खाना परन्तु प्रभु के लिए अपनी शपथ को पूरी करना।"** व्यवस्था हर प्रकार की मन्नत और शपथ को गलत नहीं कहती परन्तु केवल झूठी शपथों को गलत माना गया है। वास्तव में शपथ विशेष परिस्थितियों में ही खाई जानी आवश्यक है (निर्गमन 22:10-13; गिनती 5:16-22)। इसके अलावा लोगों को मूर्तियों के देवताओं के नाम में शपथ खाने के बजाय परमेश्वर के नाम में शपथ खाने की आज्ञा थी (व्यवस्थाविवरण 6:13, 14; 10:20)। परन्तु झूठी मन्नतों और शपथों को खाने वालों के लिए जो परमेश्वर का नाम व्यर्थ लेने के बराबर ही था, व्यवस्था में भयंकर परिणाम बताए गए हैं (निर्गमन 20:7, 16; लैव्यव्यवस्था 19:11, 12; गिनती 30:2; व्यवस्थाविवरण 5:11; 19:15-20; 23:21-23)।

**आयतें 34, 35.** एक बार फिर यीशु ने शायद अतिश्योक्ति के साथ, हर प्रकार की शपथ की मनाही की है: **"परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि कभी शपथ न खाना"** यीशु के समय के यहूदी परमेश्वर का नाम व्यर्थ लेने से तो बचते थे परन्तु वे **स्वर्ग की, धरती की, यरूशलेम की,** मन्दिर की, मन्दिर के सोने की, वेदी की, वेदी की भेंट की, वेदी के बर्तनों की और अन्य ऐसी चीज़ों की शपथ खाते थे।[32] परन्तु वे यह नहीं मानते थे कि वे इन सभी शपथों को पूरा करने को विवश हैं। मत्ती 23:16-22 के अनुसार यहूदियों का मानना था कि यदि कोई मन्दिर के सोने की या वेदी की शपथ खाए तो उसे मानना आवश्यक था। परन्तु यह वे मन्दिर की और वेदी की शपथ खाए तो इसे पूरा करना आवश्यक नहीं है। मिश्नाह में व्यक्ति यदि स्वर्ग और धरती की

शपथ खाए तो उसे उस शपथ से छूट दी गई है, परन्तु यदि वह परमेश्वर (चाहे, ''अदोनाय,'' ''याहवेह,'' ''सर्वशक्तिमान'' का इस्तेमाल करे) की शपथ खाए या परमेश्वर के किसी भी नाम की (जैसे ''वह जो दयालु और अनुग्रहकारी है'') तो वह उसे माननी पड़ेगी।[33]

यीशु ने यह पुष्टि करते हुए कि हर प्रकार की शपथ पूरी की जानी आवश्यक है, ऐसी प्रथाओं के कपट और छल की भर्त्सना की। यहूदी लोग चाहे हर बात में परमेश्वर के नाम की शपथ नहीं खा रहे थे पर वे उन चीज़ों की शपथ खा रहे थे जो उसके साथ बड़ी निकटता से जुड़ी हुई है। ''स्वर्ग'' **परमेश्वर का सिंहासन** है, और ''धरती'' **उसके पांवों की चौंकी है** (यशायाह 66:1)। इसके अलावा, ''यरूशलेम'' **महाराजा का नगर है** (भजन संहिता 48:2), और ''मन्दिर'' जो उसका वासस्थान है (23:21)। अपनी शपथों को तोड़कर वे परोक्ष रूप में वास्तव में परमेश्वर का नाम व्यर्थ में ले रहे थे।

**आयत 36.** घटता हुआ क्रम (स्वर्ग, धरती और यरूशलेम) व्यक्तिगत व्यक्ति के साथ समाप्त होता है: **''तू एक बाल को भी न उजला, न काला कर सकता है।''** मिशनाह में ''अपने अपने सिर के प्राण की'' शपथ लेने की बात है, और रब्बी लोग इस पर बहस करते थे कि इसे वापस लिया जा सकता है या नहीं।[34] यीशु ने मनुष्य की निर्बलता के कारण ऐसी शपथों की मूर्खता की बात करते हुए कहा कि ''तू एक बाल को भी न उजला, न काला कर सकता है।'' इसके विपरीत मनुष्यजाति के ऊपर पूरा नियन्त्रण परमेश्वर का है, यहां तक कि व्यक्ति के सिर के बाल भी उसके गिने हुए हैं (10:30)।

**आयत 37.** यीशु ने अपने चेलों को समझाया, **''परन्तु तुम्हारी बात 'हां' की 'हां,' या 'नहीं' की 'नहीं' हो।''** NIV में ''केवल ''हां'' को ''हां'' और ''न'' को ''न'' ''हो'' है। यीशु अपने चेलों को साफ़ साफ़ और ईमानदारी से जवाब देने को कह रहा था (देखें 2 कुरिन्थियों 1:17–24; याकूब 5:12)। यदि कोई हमेशा सच बोलता हो तो उसे शपथ खाने की आवश्यकता ही नहीं है।

मन्नतों और शपथों के प्रति यीशु का व्यवहार एसेनी लोगों वाला ही था। उनके बारे में जोसेफस ने लिखा है:

> वे अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध हैं: और शान्ति के सेवक हैं। वे जो कुछ भी कहते हैं वह शपथ से भी पक्का होता है; परन्तु वे शपथ खाने से बचते हैं, और वे इसे झूठी गवाही देने से भी बुरा मानते हैं; क्योंकि उनका कहना है कि जिस व्यक्ति पर [परमेश्वर की] शपथ खाए बिना विश्वास न किया जा सकता हो, वह तो पहले ही दोषी ठहर चुका है।[35]

परन्तु एसेनी सम्प्रदाय में मिलाए जाने वाले लोगों के लिए ''परमेश्वर के प्रति पवित्रता'' और ''मनुष्यों के प्रति न्याय'' के सम्बन्ध में ''बड़ी बड़ी शपथें'' खाना आवश्यक था।[36]

यीशु ने कहा, ''जो कुछ इससे [''हां'' या ''न'' से] अधिक होता है वह बुराई से होता है।'' यूनानी विशेषण ''बुराई'' को आंशिक रूप में ''दुष्ट'' के रूप में भी समझा जा सकता है (5:37; 6:13; 13:19, 38; NIV)। अपनी शपथों में यहूदियों के छल शैतान की ओर से मिला जो ''झूठ का पिता है'' (यूहन्ना 8:44)। यीशु ने चाहा कि उसके चेले पिता की ईमानदारी की नकल करें (5:48)। इसके अलावा उन्हें यीशु के पीछे भी चलना चाहिए, जिसे ''सत्य'' के

रूप में दिखाया गया है (यूहन्ना 14:6), जिसके ''मुंह से छल की कोई बात नहीं'' निकली थी (1 पतरस 2:22)।

क्या यीशु विशेष बात के बजाय सामान्य नियम के रूप में शपथों की मनाही कर रहा था? अपने सुनने वालों को प्रभावित करने के लिए 5:34, 37 में यीशु की बातों को बढ़ाना आवश्यक है। आखिर यह ध्यान दिलाया गया है कि मसीह ने उस महायाजक को जिसने उसे शपथ दी थी, उत्तर दिया था। (''मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं''; 26:63, 64)। सच्ची शपथें परमेश्वर की प्रेरणा पाए पौलुस के पत्रों में मिलती हैं (रोमियों 1:9; 1 कुरिन्थियों 15:31; 2 कुरिन्थियों 1:23; गलातियों 1:20; फिलिप्पियों 1:8; 1 थिस्सलुनीकियों 5:27)। इब्रानियों के लेखक ने कहा कि परमेश्वर ने शपथ के साथ कसम खाई (इब्रानियों 6:17, 18)।

## बदला लेने के बारे में (5:38-42)

**[38]''तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत।' [39]परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। [40]यदि कोई तुझ पर नालिश करके तेरा कुरता लेना चाहे, तो उसे दोहर भी ले लेने दे। [41]जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए, तो उसके साथ दो कोस चला जा। [42]जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उससे मुंह न मोड़।''**

**आयत 38.** यीशु द्वारा यहां इस्तेमाल किया गया उद्धरण **''आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत''** पुराने नियम से लिया गया है (निर्गमन 21:24; लैव्यव्यवस्था 24:20; व्यवस्थाविवरण 19:21)। आम तौर पर इसे *lex talionis* अर्थात बदला लेने का नियम कहा जाता है। इस प्रकार का कानून सबसे पहले पुराने बेबिलोन के राज्य के प्रसिद्ध राजा हमुरबी के कानून में[37] लिखा गया था (लगभग 1800 ई.पू.)। पहली बार देखने पर चाहे यह निर्शंस और क्रूर लगे, पर वास्तव में यह दया का कानून था। पहले तो यह व्यक्ति को उससे अधिक दण्ड देने से रोकता था जिसके वह योग्य है। दूसरा यह सतर्कता समिति के घूमने वाले दलों को उन्हें सही लगने वाले किसी भी प्रकार के ''न्याय'' से रोकता था (लैव्यव्यवस्था 19:18; नीतिवचन 20:22; 24:29)। मूसा की व्यवस्था में बदला लेने का काम न्याय के प्रबन्ध तक सीमित था। निर्णय लोगों के बीच में, पूरी कानूनी सुरक्षा के साथ दिए जाते थे (व्यवस्थाविवरण 19:15-21)। व्यवस्था में किसी व्यक्ति को दोषी ठहराए जाने से पहले गवाही की पुष्टि के लिए कम से कम दो गवाहों का होना जरूरी था (व्यवस्थाविवरण 17:6)। तीसरा ऐसे नियम अपराध के हिसाब से दण्ड देने की अनुमति देते थे।

शास्त्रियों और फरीसियों ने उन बातों को जो परमेश्वर ने मनुष्य की भलाई के लिए दी थीं, लेकर बुराई बना दिया था। व्यवस्था का इस्तेमाल सुरक्षा के लिए करने के बजाय उन्होंने इसे बदला लेने के लिए बिगाड़ दिया था। इस बिगाड़ में बदला लेने की इच्छा की मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति थी। परमेश्वर द्वारा अपने लोगों पर लगाए गए नियन्त्रणों के बिना उन्होंने निर्दोषों को दण्ड देने वाले हो जाना था। यीशु ने न केवल व्यवस्था के इस बिगाड़ के साथ निपटा बल्कि उसने परमेश्वर की मूल मंशा के आत्मिक पहलू को भी दिखाया। उसने अपने चेलों से

बदला लेने की स्वाभाविक प्रवृति का सामना करने और ''बुराई को भलाई के साथ जीतना'' सिखाया (देखें रोमियों 12:21)। आखिर बदला लेने का काम परमेश्वर का है (रोमियों 12:19; इब्रानियों 10:30)।

मसीह के समय में यह नियम बिल्कुल ऐसे ही लागू नहीं किया जाता था। लोग दूसरों के दांत नहीं तोड़ते थे या उनकी आंखें नहीं निकालते थे। समझौते की राशि का सिस्टम काम करता था जिसमें जज आंख या दांत की कीमत तय करता था।[38] आंख की कीमत एक साल की मज़दूरी या इससे अधिक हो सकती थी, और दांत की कीमत गेहूं के कुछ थैले हो सकते थे। यह कुछ कुछ आधुनिक अदालतों में व्यक्तिगत घावों से निपटने की तरह ही था जिसमें होने वाले नुक्सान का अनुमान लगाकर उसका बदला दे दिया जाता है। परन्तु बहुत से मामलों में लोगों ने कानूनी प्रणाली का दुरुपयोग किया है जिसकी यीशु ने मनाही की: बदला लेने की प्रणाली का इस्तेमाल प्रतिशोध लेने के लिए किया जाता है। घाव के लिए उचित मुआवज़ा पाने के बजाय उससे जो बनता था अधिक बदला या प्रतिकार चाहते थे। लोगों ने बदला लेने का और आर्थिक पुरस्कार के लिए नियम का लाभ उठाया है।

**आयत 39. ''बुरे का सामना न करना''** की यीशु की आज्ञा ''न्याय न मांगना'' के समान नहीं है। इस बात को उसकी मूल टिप्पणियों के संदर्भ के विपरीत समझा जाना आवश्यक है। ''सामना'' के लिए यूनानी शब्द चेलों द्वारा किसी दुष्ट व्यक्ति की ओर से उन्हें पहुंचाई जाने वाली हानि का विरोध करने से था। यीशु के निर्देशों में व्यक्तिगत हानि के मामलों को निपटाने के ढंग और बदला लेने, तंग करने और नाराजगी के विषय में है। निश्चय ही उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि हमें अन्याय के विरुद्ध आवाज नहीं उठानी चाहिए, जो कि उसने स्वयं भी कई अवसरों पर उठाई (21:12; यूहन्ना 2:15)। याकूब ने ''शैतान का सामना'' करने को कहा (याकूब 4:7); इसलिए हमें किसी भी बुराई का जिसे वह आरम्भ करता है सामना करना आवश्यक है (6:13; रोमियों 12:9; 1 थिस्सलुनीकियों 5:22; 2 तीमुथियुस 4:18)। जॉन मैकार्थर, जूनी., ने मसीह के अनुयायी के लिए बुराई का सामना करने को अति आवश्यक माना:

> बुराई को न रोकना न तो उचित ही है और न अच्छा। यह तो निर्दोष को बचाने में नाकाम रहता है और इसमें दुष्ट को अपनी बुराई करते रहने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। परन्तु बुराई को सही ढंग से रोकना, न केवल उचित बल्कि लाभदायक भी है। ...
>
> न्याय के परमेश्वर के मानदण्ड को अलग करने का अर्थ धार्मिकता के परमेश्वर के मानदण्ड को अलग करना है-जिसे पूरा करने और स्पष्ट करने के लिए यीशु आया, न कि उसे दूर करने या मिटाने।[39]

व्यक्तिगत बदला लेने के मूल नियम ठहराने के बाद, यीशु ने दुर्व्यवहार को समझाने की पांच घटनाएं बताईं। पहली घटना में शारीरिक हमले का कार्य था: **''जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे।''** वह किसी को मुंह पर घूसा मारे जाने की बात नहीं कर रहा था; बल्कि वह उल्टे हाथ से किसी के गाल पर हल्के से मारे जाने की बात कर रहा था। यहूदी लोग इसे बड़ा अपमान समझते थे (देखें अय्यूब 16:10; विलापगीत 3:30; मत्ती 26:67, 68; मरकुस 14:65; यूहन्ना 18:22; 2 कुरिन्थियों 11:20)। निश्चय ही मुंह पर थप्पड़

की बात अपमान और बदनामी थी। यहूदी व्यवस्था में हथेली या घूसे से मुंह पर मारे जाने से उल्टे हाथ से मुंह पर थप्पड़ मारे जाने का हर्जाना दोगुना था।[40]

मुंह पर थप्पड़ के अपमान का बदला लेने के बजाय यीशु ने दूसरा गाल फेर देने को कहा। बेशक थप्पड़ खाने की स्वाभाविक प्रतिक्रिया वैसे ही मार देने की होगी, पर यीशु ने इसके उलट बताया। यह प्रतिक्रिया उस दीन और विनम्र सोच के अनुसार है जिसकी उसने अपने चेलों के लिए पहले ही वकालत की थी। दूसरा गाल फेर देना मासूम, उदार व्यवहार को दिखाता है। स्वभाव की शान और सामर्थ चोट लगने या अपमानित होने पर वैसे ही मारकर नहीं दिखाई जाती। पौलुस ने कहा कि जब हम दुर्व्यवहार का जवाब दयालुता के साथ देते हैं तो हम गलती करने वाले के सिर पर ''आग के अंगारों का ढेर'' लगा देते हैं (रोमियों 12:20)। यानी जब हम दुर्व्यवहार का जवाब इस प्रकार से देते हैं, तो गलती करने वाले को शर्म से जम जाना चाहिए और शायद अपने बुरे कामों के लिए मन भी फिराना चाहिए।

**आयत 40.** यीशु के दूसरे उदाहरण में व्यक्ति के मुद्दई (वादी) द्वारा मुदआलय (प्रतिवादी) के कपड़े लेने की कोशिश करते हुए अदालत में मुकदमा चलाने को दिखाया गया है: ''**यदि कोई तुझ पर नालिश करके तेरा कुरता लेना चाहे, तो उसे दोहर भी ले लेने दे।**'' प्रतिवादी के पास यदि पर्याप्त दोहर न हो तो कर्ज़ के स्थान पर कपड़े रखे जा सकते थे। स्पष्टतया यीशु ने अतिश्योक्ति का इस्तेमाल जारी रखा, क्योंकि ''कुरता'' और ''दोहर'' ले लिए जाने पर व्यक्ति लगभग नंगा ही हो जाए (यह मानते हुए कि उसके पास केवल यही कपड़े थे)।

''कुरता'' या ''अंगरखा'' (NIV) ''बनियान जैसा लम्बी आस्तीन वाला भीतरी वस्त्र जिसे व्यक्ति दूसरे कपड़ों के नीचे पहन सकता है। आम तौर पर पुरुषों का बाहरी वस्त्र छोटा और स्त्रियों का घुटने तक होता था।''[41] अधिक महत्वपूर्ण और कीमती वस्त्र ''दोहर'' या ''चोगा'' होता था (NIV)। यह बाहरी वस्त्र कुरते के ऊपर पहने जाने वाला बाहरी वस्त्र होता था। यीशु ने कहा कि जब किसी चेले पर उसके कुरते के लिए मुकदमा किया जाए तो वे स्वेच्छा से अपना चोगा भी दे दे। पहनने की इन चीज़ों को लूका में उलटक्रम में दिया गया है, जिससे मुकदमे के बजाय उस संदर्भ में लूट का संकेत मिल सकता है (लूका 6:29)।

मौसम से बचाव के लिए ओढ़नी होने के अलावा, दोहर का इस्तेमाल सर्दियों की ठण्डी रातों में कम्बल के रूप में और गर्मियों में तकिये के रूप में किया जाता था। किसी व्यक्ति द्वारा कर्ज़ की ज़मानत के रूप में अपना चोगा देने पर उसे रात को लौटा दिया जाना आवश्यक था (निर्गमन 22:26, 27; व्यवस्थाविवरण 24:12, 13; अय्यूब 22:5, 6)। अदालतों में व्यक्ति को अपना दोहर पक्के तौर पर देना आवश्यक नहीं होता था पर वह स्वेच्छा से इसे दे सकता था। यीशु कह रहा था कि मुकदमे में कठोर और नाराज होकर दोनों पक्षों के लिए अप्रिय अनुभव कराने के बजाय मुकदमे में दोहर को दे देना बेहतर होगा। बाद में प्रेरित पौलुस ने लिखा कि मसीही व्यक्ति के लिए अविश्वासियों के सामने अदालत में मामला ले जाने के बजाय ठगे जाना बेहतर होगा (1 कुरिन्थियों 6:1-8)।

**आयत 41.** यीशु का तीसरा उदाहरण यहूदियों पर रोमी अधिकारियों के उनके लिए उनका बोझ ले जाने के सम्बन्ध में: ''**जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए, तो उसके साथ दो कोस चला जा।**'' अनुवादित क्रिया शब्द ''बेगार में ले जाए'' फारसी से लिया गया शब्द है

जिसका अर्थ है ''विवश'' या ''सेवा में ज़बर्दस्ती'' करना। स्पष्टतया इस शब्द की पृष्ठभूमि का काम फारस की शाही डाक सेवा करती थी। राजा कुस्त्रु अपने साम्राज्य में संदेश पहुंचाने के लिए रिले प्रणाली का इस्तेमाल करता था। उसने प्रमुख राजमार्ग के साथ साथ डाक के केन्द्र बना दिए, जिन्हें एक दिन के सफ़र के द्वारा अगले केन्द्र से अलग किया गया। एक से दूसरी चौकी तक संदेश पहुंचाने के लिए घुड़सवारों का इस्तेमाल किया जाता था। पहला घुड़सवार दूसरे को संदेश देता, दूसरा तीसरे को, और इस प्रकार से यह संदेश आगे पहुंचाया जाता। डाक ले जाने वाले हर कार्य को *angaros* कहा जाता था और डाक ले जाने की प्रणाली को *angarēion* कहा जाता था।[42] *Angareuō* शब्द का अर्थ ''सेवा में किसी को लगाना'' के साथ-साथ ''दूत को भेजना'' था। दूतों या हरकारों को राजा की प्रजा के अपने घोड़ों और उनके काम को पूरा करने के लिए आवश्यक अन्य चीज़ों का इस्तेमाल करवाने को विवश करने का अधिकार होता था।

बाद में रोमियों ने अपनी प्रजा को उनके लिए बोझ उठाने के लिए विवश करके इस प्रथा को विस्तार दे दिया। यूनानी दार्शनिक एपिक्टेटुस ने लोगों को परामर्श दिया:

> जहां तक हो सके, जहां तक अनुमति मिले, तुम्हें अपने पूरे शरीर को बोझ से लदे हुए गदे की तरह व्यवहार करना होगा; और यदि इसकी आज्ञा दी जाती है या कोई सिपाही इसे पकड़ता है तो, इसे जाने दो, सामना या बुड़बुड़ न करो। यदि करते हो तो तुम्हें मार तो पड़ेगी ही तुम्हारा छोटा गधा भी छिन जाएगा।[43]

इसी प्रबन्ध के चलते शमौन कुरेनी को मसीह का क्रूस उठाने के लिए सिपाहियों ने बेगार में लगाया था (27:32)। एक सिपाही किसी नागरिक से अपना बोझ केवल एक रोमी मील तक उठवा सकता था। विलकिंस के अनुसार, ''यूनानी शब्द *मिलियोन* का अर्थ 'हज़ार कदम' है जो लगभग 4854 फुट (आधुनिक अमेरिकी 'मील' से थोड़ा कम) बनता है ।''[44]

अपने चेलों को रोमी अधिकारी का सामान आवश्यक कोस तक ले जाने के लिए बेगार में ले जाए जाने का सामना करने की शिक्षा देने के बजाय यीशु ने उन्हें दूसरा कोस भी जाने को प्रोत्साहित किया। ऐसा करके मसीही व्यक्ति सिपाही के ऊपर परमेश्वर के भय का प्रभाव डाल सकता होगा। प्रेम और आदर के कारण उसके चेलों के लिए जितना कहा जाए उससे बढ़कर और आगे जाना आवश्यक था। बाद में उसने कहा, ''जब तुम उन सब कामों को कर चुको, जिसकी आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, 'हम निकम्मे दास है; जो हमें करना चाहिए था हमने केवल वही किया' '' (लूका 17:10)।

**आयत 42.** चौथे उदाहरण में किसी के धन को न लौटाने की मंशा से मांगने को दिखाया गया: ''**जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे।**'' इन दो अन्तिम उदाहरणों में दुर्व्यवहार या बेगार में काम करवाने के जवाब की कोई बात नहीं थी बल्कि निर्धनों द्वारा की जाने वाली सीधी विनतियों की बात है।[45] व्यवस्था में इस्राएलियों को अपने बीच में पाए जाने वाले निर्धनों के साथ उदारता से व्यवहार करने को कहा गया है (व्यवस्थाविवरण 15:7-11)। लियोन मौरिस ने इस के समानान्तर वचन लूका 6:30 पर इस प्रकार टिप्पणी की है:

> एक बार फिर यह इस बात को कहने की सोच है कि यह महत्वपूर्ण है। यदि मसीही

लोग इसका अर्थ ज्यों का त्यों ले लेते तो शीघ्र ही संतनुमा कंगालों का और एक समृद्ध निकम्मों और चोरों का वर्ग बन जाते जिनके पास कुछ नहीं होता, यीशु यह नहीं कह रहा था बल्कि वह तो यह चाहता था कि उसके चेले दान दें और देने को तैयार हों।[46]

यीशु की इस आज्ञा से स्पष्ट संकेत मिलता है कि दूसरों की आवश्यकताओं का ध्यान अपनी सुविधा से पहले रखा जाना चाहिए।[47]

पांचवां उदाहरण पिछले उदाहरण के साथ बड़ी नज़दीकी के साथ जुड़ा है, पर इस मामले में एक व्यक्ति के किसी दूसरे से उधार मांगने की बात है: ''**जो तुझ से उधार लेना चाहे उससे मुंह न मोड़।**'' व्यवस्था में गारंटी थी कि एक यहूदी बिना ब्याज लिए किसी दूसरे को उधार दे (निर्गमन 22:25; लैव्यव्यवस्था 25:35-37; व्यवस्थाविवरण 23:19, 20)। इस मामले में भी व्यवस्था के अनुसार सात साल के बाद कर्ज़ स्वेच्छा से क्षमा किए जाना आवश्यक था। इससे उधार लेने वाले को तो अच्छा अवसर मिल जाता पर उधार देने वाला अच्छी स्थिति में नहीं होता।

यीशु किसी व्यवसायी उद्यम के लिए धन उधार देने की बात नहीं कर रहा था। उस समय में ऐसे उधार नहीं दिए जाते थे। इसके बजाय वह किसी की व्यक्तिगत आर्थिक सहायता के लिए जायज़ आवश्यकता की बात कर रहा था। ऐसी परिस्थिति आने पर साथी यहूदियों के लिए बिना मुआवजे का विचार किए सहायता करना आवश्यक था। यीशु ने लूका 6:34 में ऐसी ही उदारता के लिए कहा: ''और यदि तुम उन्हें उधार दो, जिन से फिर पाने की आशा रखते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी पापियों को उधार देते हैं, कि उतना ही फिर पाएं।'' पुरस्कार पाने की उम्मीद न करने वाली उदारता मसीह के मन को दिखाती है और संसार को परमेश्वर की ज्योति दिखाती है।

## शत्रुओं के बारे में (5:43-48)

**[43]''तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर।' [44]परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो; [45]जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है। [46]क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिए क्या फल होगा? क्या महसूल लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते? [47]यदि तुम केवल अपने भाइयों ही को नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते? [48]इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।''**

**आयत 43.** यीशु ने उसकी समीक्षा की जिसे यहूदियों में अपने और अन्यजातियों के बीच सम्बन्धों के विषय में जाना जाता था। एक ओर तो लोगों को सिखाया जाता था, ''**अपने पड़ोसी से प्रेम रखना।**'' यह लैव्यव्यवस्था 19:18 का संक्षिप्त विवरण है: ''पलटा न लेना, और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना, परन्तु एक दूसरे से अपने ही समान प्रेम रखना; मैं यहोवा हूं।'' यीशु

ने इसे दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा बताया जो ''तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; ...'' के बाद आती है (लूका 10:27; देखें मत्ती 22:34-39; व्यवस्थाविवरण 6:5)। अफ़सोस की बात है कि यहूदी लोग ''पड़ोसी'' का अर्थ जिससे उन्हें बहुत प्रेम करना आवश्यक था, अपने किसी निकटतम अर्थात अपने नज़दीकी दोस्तों, परिवार और परिचित लोगों को मानते थे (लूका 10:29-37)।

दूसरी ओर, लोगों को गलत सिखाया गया था, ''[तू] **अपने बैरी से बैर** [रखना]।'' प्रेम रखने की पिछली आज्ञा के विपरीत, यह इस्राएल के लोगों को अपने शत्रुओं से घृणा करने की पुराने नियम के किसी विशेष निर्देश से नहीं लिया गया।[48]

अपने शत्रुओं से घृणा करने का विचार स्पष्ट रूप में कुमरान के सम्प्रदाय द्वारा जताया गया है। खारे समुद्र की पत्रियों में, द *कम्युनिटी रूल* में सदस्यों को ''ज्योति के सब पुत्रों से प्रेम रखने, प्रत्येक को परमेश्वर के डिज़ाइन में अपने भाग के अनुसार, और अंधकार के सब पुत्रों से घृणा, प्रत्येक को उसके दोष के अनुसार परमेश्वर के बदला लेने'' को कहा गया।[49] जोसेफस ने लिखा कि यहूदी लोगों को आम तौर पर ''मनुष्य से घृणा करने वाले'' माना जाता था परन्तु उसने (स्वयं यहूदी) इस आरोप का खण्डन किया।[50]

**आयत 44.** ''अपने पड़ोसी से प्रेम'' रखने की आज्ञा में यीशु ने ''**अपने बैरियों से प्रेम**'' रखना जोड़ दिया। ''प्रेम'' के लिए यहां यूनानी क्रिया शब्द संज्ञा शब्द *अगापे* से सम्बन्धित है जो प्रेम करने के सर्वोच्च रूप का संकेत देता है। यह शब्द भावुक भावनाओं के लिए नहीं बल्कि किसी दूसरे की सबसे अधिक भलाई चाहने के लिए है। यीशु कह रहा था कि उसके चेले दूसरे लोगों की भलाई के लिए जो किया जाना चाहिए वह करना चाहिए, चाहे वे उनके मित्र हों या शत्रु। इसके समानांतर वचन लूका में यीशु ने कहा, ''अपने शत्रुओं से *प्रेम रखो*; जो तुम से बैर करें, उनका *भला करो*'' (लूका 6:27)।

यीशु ने यह भी कहा, ''**अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो**'' (देखें 5:10-12)। अपने शत्रुओं के प्रति प्रेम भावना रखना चाहे कठिन हो सकता है, पर जैसे हम चाहते हैं कि वे हमारे साथ करें वैसा उनके साथ किया जा सकता है (7:12)। डग्लस आर. ए. हेयर का अवलोकन है:

> हम अपने आपको याद दिलाए बिना कि परमेश्वर जो हम से प्रेम करने के योग्य है हमारे आज्ञा न मानने के बावजूद उन से प्रेम कर सकता है जो हम से घृणा करते और हमें तंग करते हैं, हम अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना निरन्तर नहीं कर सकते। अपने शत्रुओं को परमेश्वर के प्रेम के प्रकाश में देखना उन्हें सकारात्मक कामों के साथ देखने के लिए पहला कदम है।[51]

यीशु ने स्वयं उनके लिए प्रार्थना की जिन्होंने उसे सताया था। क्रूस के ऊपर उसने पुकारा, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं'' (लूका 23:34)।

**आयत 45.** शत्रुओं से प्रेम करना पापियों के प्रति व्यवहार को दिखाता है। परमेश्वर विश्वासियों और ''परमेश्वर की निन्दा करने वाले दोनों पर **सूर्य** [चमकाता] और **मेंह बरसाता** है'' (देखें भजन संहिता 19:1-6; 145:9; प्रेरितों 14:16, 17)। अपने शत्रु के साथ इस समय

मित्रों वाला व्यवहार करने पर हम पिता से बढ़कर कभी नहीं हो सकते। **अपने पिता की सन्तान** वाक्यांश पुत्रों के अपने पिता का अनुसरण करने की इस भूमिका की ओर ध्यान दिलाता है (देखें इफिसियों 5:1)।

**आयत 46.** यीशु ने पूछा, **''क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिए क्या फल होगा?** '' किसी व्यक्ति के बारे में असाधारण बात नहीं मिलती कि वह किसी ऐसे व्यक्ति से प्रेम करता हो जो उससे प्रेम रखता हो। दूसरों के साथ प्रेम रखने के इस न्यूनतम ढंग को लेने वालों को कोई प्रतिफल नहीं मिलेगा, क्योंकि इतना तो **महसूल लेने वाले भी** करते हैं।

महसूल लेने वालों को तुच्छ माना जाता था क्योंकि वे यहूदियों से रोमी सरकार के लिए कर एकत्र करते थे और आम तौर पर उनसे अधिक लेते थे। इस प्रणाली का एक चक्रीय रूप था। रोमी लोग किसी विशेष क्षेत्र में कर लगाने के अधिकारों की बोली लगाते थे। बोली जीत जाने वाला व्यक्ति वास्तविक कर एकत्र करने के लिए अपने अधीन काम करने वालों को रखता था। काम करने वालों को वेतन देने के लिए ठहराए हुई हुई राशि से अधिक इकट्ठा करना कानूनी तौर पर जायज था। तौभी कर्मचारियों के लिए जितना ठहराया गया था उससे अधिक इकट्ठा करना उनकी विशेषता थी। ''कर एकत्र करने वाले जितना अधिक इकट्ठा करते उतनी ही उनसे घृणा की जाती और जितनी उनसे घृणा की जाती उतना ही वे और इकट्ठा करते थे।''[52] मत्ती महसूल लेने वालों को अन्यजातियों (5:46, 47; 18:17), पापियों (9:10, 11; 11:19) और वेश्याओं (21:31, 32) से मिलाता है। मिशनाह में उन्हें चोरों और हत्यारों के साथ भी मिलाया गया है।[53]

**आयत 47.** अपने पिछले प्रश्न की तरह ही यीशु ने पूछा, **''यदि तुम केवल अपने भाइयों ही को नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो?**'' रॉबर्ट एच. गुंडरी ने ध्यान दिलाया है, ''नमस्कार 'हैलो से कहीं बढ़कर था' इसमें दूसरे व्यक्ति की भलाई की इच्छा जताना शामिल था।''[54] यदि कोई अपने शत्रु से घृणा करता हो तो वह उसे सलाम तो कभी नहीं करेगा।

जो लोग इस प्रकार से व्यवहार करते थे, यानी केवल अपने परिवार या जान पहचान के लोगों को सलाम करते थे, वे **अन्यजातियों** से बेहतर नहीं थे। यहूदियों के लिए यह संदेश सुनना कठिन रहा होगा। यीशु अपने चेलों को दूसरों से बढ़कर प्रेम रखना चाहता था। उनमें वह अन्तर मिलना चाहिए था जो अन्यजातियों या कठोर शत्रुओं को भी अपनी ओर खींचे।

**आयत 48.** प्रेम पर अपनी चर्चा के बाद यीशु के शब्दों से एक बड़ा ''इसलिए'' निकला। **''इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।**'' ''सिद्ध'' के लिए यूनानी शब्द *teleios* (*टेलियोस*) का अनुवाद ''पूर्ण'' (19:21) या ''परिपक्व'' (1 कुरिन्थियों 2:6; 14:20; इफिसियों 4:13) भी हो सकता है। यहां इस शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर के विवरण के रूप में हुआ है इस कारण इसका अर्थ सिद्धता से है। वही वह मानक है जिसके द्वारा सब चेलों को अपने आपको मापना चाहिए। इससे मिलता-जुलता, सिद्धता का सम्बन्ध अपने शत्रुओं से वैसे ही प्रेम करना है जैसे परमेश्वर इस संसार के सब लोगों से प्रेम करता है (देखें 1 यूहन्ना 4:7-21)।

यीशु की आज्ञा अपने चेलों को असम्भव लगने वाली बात देखकर पराजित करने के इरादे से नहीं बल्कि उन्हें परमेश्वर का अनुसरण करने की प्रेरणा देने के लिए है। बेशक इस बात में

दम है जिसमें मसीही लोग इस जीवन में ''सिद्ध'' (''परिपक्व''; NIV) बन सकते हैं, पर एक और अर्थ है जिसमें वे आने वाले जीवन तक कभी ''सिद्ध'' नहीं बनेंगे। इसलिए पौलुस ने कहा, ''मैं निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं'' (फिलिप्पियों 3:12-16)। अपनी कमियों को पहचानने के लिए व्यक्ति को परमेश्वर के अनुग्रह में और भरोसा रखने की प्रेरणा मिलती है। बदले में अनुग्रह पाप के ऊपर विजय पाने के लिए प्रेरणा का काम करता है (तीतुस 2:10-14)।

''सिद्ध बनो'' की आज्ञा के महत्वपूर्ण मिलती जुलती बातें है। परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा था, ''तू अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख सिद्ध बना रहना'' (व्यवस्थाविवरण 18:13)। उसने यह भी कहा, ''कि तुम पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूं'' (लैव्यव्यवस्था 19:2)। यही बात पतरस ने मसीही लोगों को सिखाई (1 पतरस 1:15, 16)। मैदानी उपदेश में, यीशु ने कहा, ''जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो'' (लूका 6:36)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

## एक चेतावनी (5:21-26)

यदि हम सावधान नहीं हैं तो हम परमेश्वर की व्यवस्था को बिगाड़ने के वैसे ही दोषी हो सकते हैं जैसे यहूदी धार्मिक विद्वान थे। हमारे लिए मसीह की व्यवस्था को समझना सम्भव है पर फिर उसे इस प्रकार से परिभाषित और उसकी व्याख्या करना भी सम्भव है जिसकी इच्छा कभी नहीं की गई थी। जब तक हम केवल व्यवस्था की बात को मानने से सन्तुष्ट हैं, पर उसकी भावना, बातों या अर्थ से नहीं, हम अपने आपको मना सकते हैं कि हम आज्ञाकार हैं जबकि वास्तव में हम इससे बहुत दूर हैं।

## क्रोध और पाप (5:21, 22)

यीशु ने हर प्रकार के क्रोध को बुरा नहीं कहा, सिवाय उस क्रोध के जो व्यक्तिगत सम्बन्धों से निकलता है। पाप और अन्याय के ऊपर क्रोध के लिए स्थान है। समस्या यह है कि हमारा अधिकतर क्रोध इन बातों पर नहीं होता। इसके बजाय हम हमारे साथ किए गए अपमान या अन्याय पर क्रोध करते रहते हैं। व्यक्तिगत रूप से ठोकर खाने पर हम आसानी से क्रोधित हो जाते हैं, परन्तु अन्य अन्यायों की भरमार होने पर हमें क्रोध उतना नहीं आता। यीशु को भी क्रोध आता था (21:12, 13; 23:17; मरकुस 3:5), पर उसके क्रोध में कभी उसका अपना अंहकार नहीं होगा। पतरस ने लिखा कि ''वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, ...'' (1 पतरस 2:23)।

कई बार जायज चिन्ताओं और मुद्दों के अपने बचाव में हमारा अपना घमण्ड आ जाता है। फिर अपने ही विचार में अपनी स्थितियों के साथ साथ विरोधी हम पर हमले करते हैं। यह बात हमें क्रोध में प्रतिक्रिया देने का कारण बनती है। यह सोचकर कि हम सच्चाई की रक्षा कर रहे हैं हम अपने आपको धोखा देते हैं जबकि वास्तविकता में हम अपना बचाव कर रहे होते हैं। जब हम सुसमाचार का बचाव करना चाहते हैं तो हमें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि रास्ते में ''स्वार्थ'' न आ जाए।

## परमेश्वर का मानक (5:23-26)

हमारे लिए अपने और मनुष्यों के ठहराए मानकों के बीच तुलनाएं करना ही काफ़ी नहीं है। हमें परमेश्वर के मानक को लक्ष्य बनाने की कोशिश करनी चाहिए (यूहन्ना 7:24; 2 कुरिन्थियों 10:12, 13)। हम केवल उस भाई के साथ अपने सम्बन्ध पर ही विचार नहीं कर सकते, जिसका हम ने अपराध किया हो या जिसने हमारा अपराध किया है: बल्कि हमें इस पर भी विचार करना आवश्यक है कि ऐसे झगड़ों से परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध कैसे प्रभावित होता है (1 यूहन्ना 3:14-18)। इस निर्देश के जड़ में वास्तव में परमेश्वर के पवित्र वचन के प्रति हमारा व्यवहार है। उसके वचन के प्रति हमारे व्यवहार से ही हमारे कार्य तय होते हैं (1 यूहन्ना 5:2, 3)। यदि हमारे मन सही नहीं हैं, तो हमें तुरन्त समस्याओं का समाधान करना चाहिए (2 कुरिन्थियों 6:2)। आराधना के ''आत्मा और सच्चाई'' से होने के लिए (यूहन्ना 4:23) हमें औपचारिक रूप में सही होने के साथ साथ अन्दर से भी सही होना आवश्यक है।

## मेल (5:23-26)

जिस भाई का अपराध जिसने किया हो उसके साथ व्यवहार के लिए बाइबल उपयुक्त तरीके बताती है। इस वचन पाठ में यीशु ने उस भाई से सुलह करने के लिए जिसके ''मन में तेरे लिए कुछ विरोध है'' (5:23, 24) जाने में फर्ती करने पर ज़ोर दिया। एक अन्य अवसर पर उसने कहा, ''यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा ...'' (18:15)। पौलुस ने गलातिया के लोगों से कहा कि ''यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को सम्भालो ...'' (गलातियों 6:1)। यदि इन नियमों का पालन किया जाता है तो मण्डलियों में उठने वाली बहुत सी समस्याएं सुलझ जाएंगी।

पहली प्रासंगिकता में (5:23, 24), यीशु ने कहा कि यदि हमें मालूम है कि हमारे और मसीह में किसी भाई या बहन के बीच कोई समस्या है तो सच्ची आराधना का अधिकार हमें नहीं मिलता। यदि एक मसीही व्यक्ति मण्डली के किसी दूसरे सदस्य के प्रति अपने मन में गलत विचार लेकर आराधना के लिए जाता है, तो परमेश्वर का वचन हमें आश्वस्त करता है कि उस व्यक्ति की आराधना करने की कोशिश का कोई फायदा नहीं। यदि हमारा मन सही नहीं है तो परमेश्वर के सामने प्रार्थना करने का कोई मतलब नहीं है। परमेश्वर जानता है (लूका 16:15; 1 यूहन्ना 3:20)। भजनकार ने लिखा है, ''यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता, तो प्रभु मेरी न सुनता'' (भजन संहिता 66:18)। हम किसी भाई के साथ गलत रहकर परमेश्वर के साथ सही नहीं हो सकते (1 यूहन्ना 2:8-11; 4:20, 21)। वास्तव में, अपने मन में गुबार रखने वाला मसीही व्यक्ति दूसरों के आराधना करने में रुकावट बन सकता है।

यह ताड़ना बुराई को भलाई के साथ मिलाने की कोशिश करने के विरुद्ध चेतावनी है। फरीसी लोग छोटी छोटी बारीकियों पर बहुत ध्यान देते थे (23:23), पर वे दूसरों का न्याय और उन्हें दोषी ठहराना अपमानजनक ढंग से करते थे। उनकी तरह ही हम ''मसीही सेवा'' में इतने व्यस्त हो सकते हैं कि मसीही बनना भूल जाएं। बाहरी कार्यों को करते हुए हो सकता है कि हम अपने मनों में बुरी भावनाएं, नाराज़गी या ईर्ष्या को जमा करते रहें। हम अपने आपको धोखा देते

हैं जब वह नहीं कर पाते जो सही है, पर यह मानते हैं कि आराधना के संस्कार को पूरा करने से स्थिति सुधर जाएगी। यीशु कह रहा था कि हमें परमेश्वर के साथ सम्बन्ध सुधारने से पहले अपने भाइयों के साथ सम्बन्ध सुधारने आवश्यक हैं।

दूसरी प्रासंगिकता में (5:25, 26)। प्रभु ने ज़ोर दिया कि हो सके तो झगड़े अदालत के बाहर ही निपटा लिए जाएं। यह किसी भी मामले में हो सकता है, परन्तु विशेषकर साथी विश्वासियों के विषय में। पौलुस ने हमें अपने ''घर की समस्याओं को'' इस संसार की अदालतों में न ले जाने को कहा (1 कुरिन्थियों 6:1-8)। उसने कहा कि मसीह के कार्य की बदनामी करने के बजाय छले जाना बेहतर होगा। एक मसीही को दूसरे मसीही को अदालत में नहीं ले जाना चाहिए, बल्कि यीशु और पौलुस द्वारा ठहराए हुए नियम पर ध्यान देना चाहिए। न ही हमें अपने और किसी दूसरे व्यक्ति के बीच ऐसी स्थिति बनने देनी चाहिए यदि इसे रोकना हमारे बस में हो (रोमियों 12:17, 18)।

## सैक्स की सच्चाई (5:27-30)

परमेश्वर ने सैक्स को बनाया है, इसलिए यह ''गन्दा'' नहीं है। परमेश्वर ने मुनष्य को सैक्स की इच्छा दी है और उसके लिए उपयुक्त साथी दिया है। परमेश्वर जानता है कि मनुष्य का सैक्स कितना शक्तिशाली हो सकता है। वह जानता है कि गलत संदर्भ में यानी विवाह के बाहर सैक्स किसी व्यक्ति के शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक स्वास्थ्य के लिए विनाशकारी हो सकता है। इसी लिए उसने अपने सैक्स की इच्छा को संचालित करने के लिए नियम दिए हैं। परमेश्वर हम से प्रेम करता है, और वह जानता है कि हमारे लिए बेहतर क्या है। ''बेकायदा सैक्स'' जैसी कोई चीज़ नहीं है। टेलिविजन के कार्यक्रम और फिल्में सैक्स के बेपरवाह व्यवहार को बढ़ा चढ़ाकर दिखाते हैं, पर वे उस कीमत को नहीं समझ पाते जो लोगों के जीवनों को ऐसी जीवन शैली से चुकानी पड़ती है। अपने आपको सैक्स के लिए किसी दूसरे व्यक्ति को देना गम्भीर बात है। सैक्स एक शारीरिक कार्य से कहीं बढ़कर है; परमेश्वर ने इसे शरीर, मन और आत्मा सबके भागीदार होने के लिए बनाया।

आरम्भ में जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया, उसने देखा कि ''वह बहुत ही अच्छा है'' (उत्पत्ति 1:26-31)। उसने उनके सम्बन्ध को आशीष दी और उन्हें आज्ञा दी ''फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ।'' सैक्स मूल पाप नहीं था। पति/पत्नी सम्बन्ध परमेश्वर ने ही बनाया है (उत्पत्ति 2:22-25)। उसका वचन इसका समर्थन करता है (इब्रानियों 13:4)। उसने हमें वैवाहिक प्रेम की शिक्षा देने के लिए अपनी प्रेरणा से दिए गए वचन के अन्दर एक पूरी पुस्तक (श्रेष्ठगीत) शामिल की। सैक्स के व्यवहार को संचालित करने वाले उसके नियम हमारी बेहतरी के लिए हैं (19:1-9; 1 कुरिन्थियों 7:3-5)।

सैक्स समस्या नहीं। वास्तविक समस्या यह है कि हम ऐसे समाज में रहते हैं जो सैक्स के दुरुपयोग और शोषण से भरा हुआ है। सैक्स का इस्तेमाल टुथ पेस्ट से लेकर कारों तक हर चीज़ बेचने के लिए किया जाता है। टेलिविज़न के कार्यक्रम कुंवारेपन का खुलेआम मज़ाक उड़ाते हैं और सैक्स के खुले सम्बन्धों के जोक बनाते हैं। सैक्स को बढ़ावा देने वाली फिल्में, संगीत और पुस्तकें युवा श्रोताओं को ध्यान में रखकर बनाई जाती हैं, जिसमें सैक्स के जिम्मेदारी भरे व्यवहार

के स्थान पर सुखवाद की वकालत की गई होती है।

सैक्स के माहौल का दबाव अल्हड़ लोगों को यह मानने को विवश करता है कि वे यदि भीड़ के साथ न चलें तो वे अजनबी या असामान्य होंगे। इससे बिना विवाह के बच्चों के जन्म, गर्भपात, और तलाक की बढ़ती दर इसका परिणाम हैं। शारीरिक सम्बन्धों से होने वाले रोगों के विरुद्ध चेतावनियां देने वाले विज्ञापनों में इससे दूर रहने के बजाय ''सुरक्षित यौन सम्बन्ध'' की सलाह दी जाती है। सुरक्षित यौन सम्बन्ध का एकमात्र ढंग विवाह से पहले यौन सम्बन्ध से दूर रहना और किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करना है जो परमेश्वर का भय मानने वाला या वाली नैतिक और आत्मिक मूल्यों को मानता या मानती है। फिर दोनों साथियों को विवाह की शपथ को जीवनभर वफ़ादारी से मानना आवश्यक है।

हाल ही के कुछ अध्ययनों से यह उम्मीद जगी है कि यौन सम्बन्धों के कुछ व्यवहार बेहतर के लिए बदलाव करने का आरम्भ होता है। गर्भपातों की संख्या कम हुई है, कुछ युवा अपने आप को शुद्ध रखने की प्रतिज्ञा ले रहे हैं और कुछ इलाकों के स्कूलों में पारिवारिक जीवन के पाठ्यक्रम में संयम को बढ़ावा दिया जा रहा है।[55]

## वासना को मात देना (5:27-30)

यीशु ने वासना के पाप के विरुद्ध चेतावनी दी, जो आत्मा को नष्ट करता है और कई बार फोर्निकेशन तक ले जाता है जो व्यभिचार का ही रूप है । वासना का प्रलोभन केवल हमारी आधुनिक संस्कृति द्वारा वढ़ाया दिया जाता है। विलियम हैंड्रिक्सन ने लिखा है:

> [पाप] को ''मार डालना'' आवश्यक है (कुलुस्सियों 3:5)। प्रलोभन को *तुरन्त* और *निर्णायक रूप में* एक ओर पटक देना चाहिए। ... *शल्य-चिकित्सा जड़ से होनी चाहिए।* इसी समय और बिना कोई टीका लगाए अश्लील पुस्तक जला दी जाए, लज्जाजनक तस्वीर नष्ट कर दी जाए, आत्मा को नष्ट की जाने वाली फिल्म की भर्त्सना की जाए, खराब पर अंतरंग सामाजिक सम्बन्ध तोड़ दिया जाए, घातक आदत छोड़ दी जाए। पाप के विरुद्ध संघर्ष में विश्वासी के लिए कड़ी लड़ाई आवश्यक है। हवा में मुक्के मारने से कुछ नहीं होता [1 कुरिन्थियों 9:26, 27]।[56]
>
> डेविड स्टिवर्ट

## तलाक पर यीशु की शिक्षा (5:31, 32)

मत्ती 19:1-12 में यीशु ने विवाह, तलाक और पुनर्विवाह पर कई सच्चाइयां बताईं। *पहले उसने कहा कि परमेश्वर की मूल योजना एक जीवन काल के लिए एक स्त्री के लिए एक पुरुष की* (19:3-5; उत्पत्ति 2:18-25)। उसने अपने सुनने वालों को याद दिलाया कि परमेश्वर ने प्रजनन और संगति के लिए दो लिंग, अर्थात पुरुष और स्त्री बनाए। परमेश्वर ने स्त्री को पुरुष के लिए और पुरुष को स्त्री के लिए बनाया था, जिसमें किसी भी प्रकार का बदलाव उस नमूने को बदलना है (रोमियों 1:26, 27)। परमेश्वर ने एक अर्थ में विवाह का पहला समारोह यानी निकाह करते हुए आदम और हव्वा को मिलाया था। उसने विवाह के उस सम्बन्ध को उम्र भर

के लिए बनाया था।

*दूसरा, हमारे प्रभु ने कहा कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को भविष्य के सभी विवाहों के नमूने के रूप में मिलाया* (19:6)। परमेश्वर ने उन्हें जोड़ा, और उन्हें अलग करने, या अलग करने का कारण बताने का उचित अधिकार केवल उसी को दिया। परमेश्वर के नमूने से छेड़छाड़ करने के विनाशकारी परिणाम निकलते हैं। आज हमारे संसार में विवाह का परिदृश्य टूटे हुए जीवनों, बिखरे हुए घरों और परेशान बच्चों से भरा है।

*तीसरा, यीशु ने विवाह की स्थिरता को प्रोत्साहित किया* (19:7, 8)। लोग अपने समर्पण से बचाव के बहाने के लिए विवाह को आदर देने के लिए बनाए गए मूसा के मूल निर्देशों का इस्तेमाल कर रहे थे। कुछ फरीसियों ने यीशु से पूछा, ''फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे?'' (19:7)। यीशु का उत्तर था कि उनके मनों के कठोर होने के कारण (19:8)। तलाक चाहे परमेश्वर की मूल योजना का भाग नहीं था, लोग उस योजना को तोड़ रहे थे। इसलिए परमेश्वर ने विवाह को बचाने के लिए, जो कुछ हो रहा था उसको नियमित करने के निर्देश देने की मूसा को अनुमति दी (व्यवस्थाविवरण 24:1-4)। मलाकी 2:14-16 हमें बताता है कि परमेश्वर को तलाक से घृणा है। नये नियम में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि उसने इस विषय पर अपना मन बदल लिया हो। यीशु ने विवाह के लिए परमेश्वर की मूल योजना को समझाने के लिए वापस आरम्भ की ओर देखा।

*अन्त में, यीशु ने वैवाहिक सम्बन्ध की पवित्रता पर ज़ोर दिया* (19:9)। उसने कहा कि दोनों में से एक के किसी दूसरे के साथ यौन सम्बन्ध बनाने (फोर्निकेशन) के कारण को छोड़, तलाक की इच्छा न की जाए। यदि कोई अपने साथी को किसी दूसरे कारण से छोड़कर दोबारा विवाह करता है तो वह व्यभिचार का दोषी है। यीशु ने और कहा कि जो छोड़ी गई पत्नी से विवाह करता है वह भी व्यभिचार का दोषी है।

प्रेरितों को यह बात कठिन लगी (19:10), परन्तु यीशु ने जो कह दिया था उसे आसान बनाने की कोशिश नहीं की। इसके विपरीत, एक अर्थ में उसने कहा कि विवाह के लिए परमेश्वर की योजना को तोड़ने के बजाय नपुंसक हो जाना बेहतर है (19:12)। यदि लोगों को विवाह करने से पहले यह सच्चाई बता दी जाए, तो हो सकता है कि वे विवाह के समर्पण पर और गम्भीरता से विचार करेंगे और फिर किसी बात पर जिससे सुलझाया जा सकता हो जल्दी से तलाक लेने के बजाय विवाह को बनाए रखने के लिए और काम करने की कोशिश करें।

## सच्चाई (5:33-37)

आज सच्चाई सबसे महंगी है। हाल ही के अध्ययनों से पता चला है कि अधिकतर लोग कई बार झूठ बोलने के दोषी होते हैं।[57] वे अपने आपको अच्छा दिखाने, अपने आपको या प्रिय जनों को किसी हानि से बचाने, भावनाओं को ठेस न पहुंचाने, या किसी ऐसे व्यक्ति से जो उन्हें चिड़ा रहा हो पीछा छुड़ाने के लिए झूठ बोलते हैं। हम ''सफेद झूठ'' बोल सकते हैं, पर झूठ तो झूठ ही है। यीशु ने कहा कि झूठ बोलने वाले लोग अपने ''पिता शैतान'' की सन्तान हैं (यूहन्ना 8:44)। यूहन्ना ने लिखा है कि ''सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गंधक से जलती रहती है ...'' (प्रकाशितवाक्य 21:8; देखें 22:15)। बुद्धिमान ने लिखा है, ''सच्चाई

को मोल लेना, बेचना नहीं है'' (नीतिवचन 23:23क)। यीशु ने कहा कि सच्चाई हमें आज़ाद करेगी (यूहन्ना 8:32)।

## शपथ खाना (5:33-37)

आज बहुत से लोग अपनी बात की वैद्यता को बढ़ाने के लिए ''कसम से'' अवश्य करते हैं। यदि किसी की बात पर भरोसा किया जा सकता है, शपथ की कोई आवश्यकता नहीं है। यीशु ने कहा कि किसी भी प्रकार की शपथ हमारी बात के वज़न को बढ़ा नहीं सकती (5:34-36)। हमारी विश्वसनीयता के लिए किसी दूसरे से शपथ दिलाना भी काम नहीं आता। तो क्या काम आता है? भरोसे योग्य व्यक्ति के रूप में सच्चा और बात का पक्का होना (देखें इफिसियों 4:25)।

यीशु ने कहा कि किसी बात पर शपथ खाने के द्वारा अपनी बात को पक्का बनाने की कोशिश करने के बजाय हमें अपनी बात पर पक्के रहना आवश्यक है। जब हम कहते हैं ''हां'' इसका अर्थ हां ही होना चाहिए। जब हम कहते हैं ''नहीं'' तो इसका अर्थ भी वही होना चाहिए! तब लोग भरोसा करेंगे कि हम ने जो कहा है वही सही है। हमारे संसार में, हम ''मेरी बात मेरी ज़मानत है'' से ''मैं तुम्हारी बात बिना ज़मानत के नहीं मान सकता'' तक चले गए हैं। जब लोग एक दूसरे पर भरोसा नहीं करते, तो मज़बूत सम्बन्ध बनाना कठिन हो जाता है, वह चाहे घर में हो या कलीसिया में।

## हमारे अधिकारों का क्या? (5:38-42)

फरीसियों द्वारा किए जाने वाले बिगाड़ों का आधार अपने अधिकारों के ऊपर उनका ज़ोर देना था। हम एक ऐसे समय में रहते हैं जिसमें ''अपने आप'' को बढ़ावा दिया जाता है। हर कोने से हमें आत्म-केन्द्रित, अपने आप में रहने वाले, स्वार्थी होने को प्रोत्साहित किया जाता है। इस स्वार्थ से भरे युग में लोग जन-अधिकारों, नारी-अधिकारों, पीड़ितों के अधिकारों, कैदियों के अधिकारों और समलैंगिकों के अधिकारों की मांग करते हैं। लोग अधिकारों से, विशेषकर अपने अधिकारों से इतने घिर गए हैं। जब हमारे जीवनों में हमारी प्राथमिकता हमारे व्यक्तिगत अधिकार हैं, तो सच्ची धार्मिकता भूल जाती है।

बहुतों ने यह अर्थ निकालने के लिए कि मसीही लोगों को कभी हिंसा का सामना नहीं करना चाहिए मत्ती 5:38-42 की गलत व्याख्या की। इसका इस्तेमाल शान्तिवाद की शिक्षा देने, युद्ध के समय में ''नैतिक विरोध'' का समर्थन करने और मृत्यु दण्ड के विरुद्ध तर्क देने के लिए किया गया है। यीशु के कहने का अर्थ यह नहीं था कि जब कोई हमारे साथ दुर्व्यवहार करे तो हम उसका सामना न करें या यदि कोई किसी के घर को तोड़ता है तो वह अपने परिवार की रक्षा न करे। एल्बर्ट बार्नस ने लिखा है:

> मसीह का इरादा यह शिक्षा देना नहीं था कि हम अपने परिवारों की हत्या होते, या अपनी हत्या होते देखें, बजाय इसके कि उसका सामना करें। प्रकृति का नियम, और सभी नियम, चाहे वे मानवीय हों या ईश्वरीय, *जान* के खतरे में पड़ने पर आत्म रक्षा को उचित

ठहराते हैं। ... हमारे उद्धारकर्त्ता ने तुरन्त समझाया कि *उसके* यह कहने से क्या अभिप्राय है। यदि उसका इरादा इसे वहां बताने का होता जहां *जान* खतरे में है तो वह निश्चय ही इसका उल्लेख करता।[58]

## ''अपने शत्रुओं से प्रेम कर'' (5:43-48)

अपने शत्रुओं से प्रेम करने की यीशु की आज्ञा बहुत से लोगों को असम्भव लगती है। इसका एक कारण यह है कि हम आम तौर पर ''प्रेम'' (*agapē*) के वास्तविक अर्थ को गलत समझते थे। यह तो असम्भव हो सकता है कि हमारे साथ दुर्व्यवहार करने वाले व्यक्ति के प्रति हमारी भावनाएं अच्छी हैं, पर उनके साथ करुणा से व्यवहार करना हमारी पहुंच से बाहर नहीं है। 1 कुरिन्थियों 13:4-7 में पौलुस द्वारा दी गई ''प्रेम'' की परिभाषा मुख्यतया हमारा ध्यान दूसरों के प्रति हमारे धीरजवंत होने, शेखी न मारने, कठोर न होने, स्वार्थी न होने, चिड़चिड़े और सनकी न होने और मन में कटुता न रखने वाले कामों पर दिलाती है। किसी से प्रेम करने का अर्थ उसकी भलाई चाहना है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम परमेश्वर का अनुसरण कर रहे होते हैं। वह आम तौर पर अपनी सृष्टि के व्यवहार से नाराज होता है, पर इसके बावजूद वह हम पर अपनी आशिषें बरसाता और हमारी आवश्यकताओं का ध्यान रखता है।

---

टिप्पणियां

[1]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1-13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), 111. [2]वही, 116; टालमुड *किदुशीन* 28ए; और मिशनाह *एबथ* 3.12. [3]*जौंडरवन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूका,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 38 में माइकल जे. विलकिंस, ''मैथ्यू।'' [4]जॉन लाइटफुट, *ए कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट फ्रॉम द टालमुड एंड हेबरेका: मैथ्यू-1 कोरन्थियंस,* अंक 2, *मैथ्यू-मार्क* (ऑक्सफोड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1859; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर, 1979), 109. लाइटफुट ने बाइबल से बाहर के कई यहूदी लेखों से कई उदाहरण दिए, जिनमें इस शब्द का इस्तेमाल हुआ है। [5]आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 120. [6]लियोन मौरिस, *दि गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 114. [7]देखें जोयाकिम जिर्मियास, *जरूसलेम इन द टाइम ऑफ़ जीज़स,* अनु. एफ़. एच. एंड सी. एच. केव (फिलाडेल्फिया: फोर्टरेस प्रैस, 1969), 17. [8]रॉबर्ट एच. गुंडरी, *मैथ्यू: ए कमैंट्री ऑन हिज़ लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 85. [9]डग्लस आर. ए. *हेयर, मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 52. [10]मिशनाह *योमा* 8.9.

[11]*डिडेके* 14.2. [12]गुंडरी, 87. [13]देखें लाइटफुट, 118; तालमुड *बेराकोथ* 20. [14]*लेविटिकुस रब्बाह* 23.12; देखें तालमुड *बेराकोथ* 24ए; *शब्बथ* 64बी. [15]प्रवक्ता ग्रन्थ 9:8 (NRSV)। [16]जैक पी. लुईस, *दि गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* भाग 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 91. [17]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 46. यूनानी शब्द *skandalon* का अर्थ ''ठोकर लगने का पत्थर'' या ''फंदा।'' आत्मिक रूप में कहें तो यह जो किसी के परीक्षा या प्रलोभन में पड़ने का कारण बनता है (18:6, 7)। [18]यूसबियुस *इक्लेसटिकल हिस्ट्री* 6.8.1-2. [19]माउंस, 46. [20]लुईस, 92. देखें *रब्बाह इक्लेसिएस्ट्स* 1.4.

[21]KJV से यह संरचना गड़बड़ा जाती है, जहां आयत 1 में ''तो'' डाला गया है। [22]क्रिस्टोफर राइट, *इ्यूटोनोमी,*

न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1996), 255. [23]लाइटफुट, 122. [24]मिशनाह *येबामोथ* 14.1. परन्तु कोई स्त्री अदालत को अपने पति को उसे तलाक देने के लिए दबाव डाल सकती थी। (मिशनाह *अराखिन* 5.6; *नेदारिम* 11.12.) [25]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 4.8.23. [26]व्यवस्थाविवरण 24:1 में तलाक के आधार के रूप में ''निर्लजता'' के अर्थ पर बहस पर उस वचन की मुख्य बात को नज़रअन्दाज़ कर दिया जाता है जो स्त्रियों के बचाव के लिए और पुरुषों को अपनी पत्नियों को तलाक देने से पहले दो बार सोचने को मजबूर करती है। [27]मिशनाह *गिटिन* 9.10. बाद में रब्बी अकीबा ने कहा, ''चाहे उसे कोई और उससे सुन्दर भी मिल जाए।'' उसने इस बात का आधार ''उसमें कुछ लज्जा की बात पाए'' वाक्यांश को बताया (व्यवस्थाविवरण 24:1)। [28]हैग्नर, 125. [29]डब्ल्यू. एफ़. अल्ब्राइट एंड सी. एस. मन, *मैथ्यू*, द एंकर बाइबल (गार्डन सिटी, न्यू यार्क: डबलडे एंड कं., 1971), 65. [30]*Porneia* शब्द को व्यापक अर्थ में इस्तेमाल करने पर इसमें ''व्यभिचार'' (*moicheia*) समा जाता है। उदाहरण के रूप में, प्रवक्ता ग्रंथ 23:23 में कहा गया है ''अपने व्यभिचार के द्वारा उसने व्यभिचार किया है'' (NRSV)।

[31]मिशनाह *केदुबोथ* 3.5; *सोटह* 5.1; *येबामोथ* 2.8. [32]फिलो *स्पेशल लॉज़* 2.1.5; मिशनाह *नेदारिम* 1.3, 4. [33]मिशनाह *शेबुओथ* 4.13. [34]मिशनाह *सैनहेड्रिन* 3.2. [35]जोसेफस *वारस* 2.8.6. [36]वही, 2.8.7; देखें *कम्युनिटी रूल्स* 5.7, 8. [37] *कोड ऑफ़ हमुराबी* 196, 200. [38]देखें जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 4.8.35; मिशनाह *बाबा कामा* 8.1, 2. [39]जान मैक्ऑर्थर, जूनि., *द मैक्आर्थर न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री: मैथ्यू 1–7* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1985), 332. [40]देखें मिशनाह *बाबा कामा* 8.6.

[41]विलकिंस, 41. [42]हेरोदोतस 8.98; ज़ीनोफोन *साइक्लोपीडिया* 8.6.17. [43]एपिक्टेटुस 4.1.79. [44]विलकिन्स, 42. [45]हैग्नर, 131. [46]लियोन मौरिस, *लूक: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 143. [47]फ्रांस, 127. [48]देखें मौरिस, *मैथ्यू*, 129–30. कनान की विजय के लिए इस्राएलियों के लिए अपने शत्रुओं के प्रति कठोर व्यवहार का होना आवश्यक था। उस अवसर पर परमेश्वर ने अपने लोगों को कनानियों को उनकी बड़ी दुष्टता का दण्ड देने के लिए इस्तेमाल किया (उत्पत्ति 15:13–16; लैव्यव्यवस्था 18:24, 25; व्यवस्थाविवरण 9:5; 1 राजाओं 14:24)। [49] *कम्युनिटी रूल* 1.4; देखें 9.21, 22. [50]जोसेफस *अंगेस्ट एपियोन* 2.15.

[51]हेयर, 59. [52]मौरिस, *मैथ्यू*, 132, एन. 167. [53]मिशनाह *नेदारिम* 3.4; *टोहोरोथ* 7.6; *बाबा कामा* 10.1, 2. [54]गुंडरी, 99. [55]उदाहरण के लिए, ऐलन गटमेचर इंस्टीच्यूट द्वारा जनवरी 2008 में किए गए अध्ययन की रिपोर्ट थी कि 2000 और 2005 के बीच अमेरिका में गर्भपात की दर 9 प्रतिशत घटी है। (''यू. एस. अबोर्शन रेट फाल्स, स्टडी फ़ाइंड'' [http://www.reuters.com/article/domesticNews/idUSN1722176020080117; इंटरनेट; 15 जुलाई 2009 को देखा गया].) [56]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री: एक्पोज़िशन ऑफ दि गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 303. [57]ऐसी ही एक रिपोर्ट यूलरिक बोज़र, ''वी. आर. ऑल लाईन लॉयर्स: वाइन पीपल टेन लाइस, एण्ड वाय वाइट लाईज़ कैन बी ओके,'' *यू. एस. न्यूज़ एण्ड वर्ल्ड रिपोर्ट* (http://health.usnews.com/articles/health/brain-and-behavior/2009/05/18/were-all-lying-liars-why-people-tell-lies-and-why-white-lies-can-be-ok.html; इंटरनेट पर 17 जुलाई 2009 को देखा गया)। [58]एल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामैंट: मैथ्यू एंड मार्क,* संपा. रॉबर्ट फ्रयू (फिलाडेल्फिया: पृष्ठ नहीं, 1832; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1974), 59.

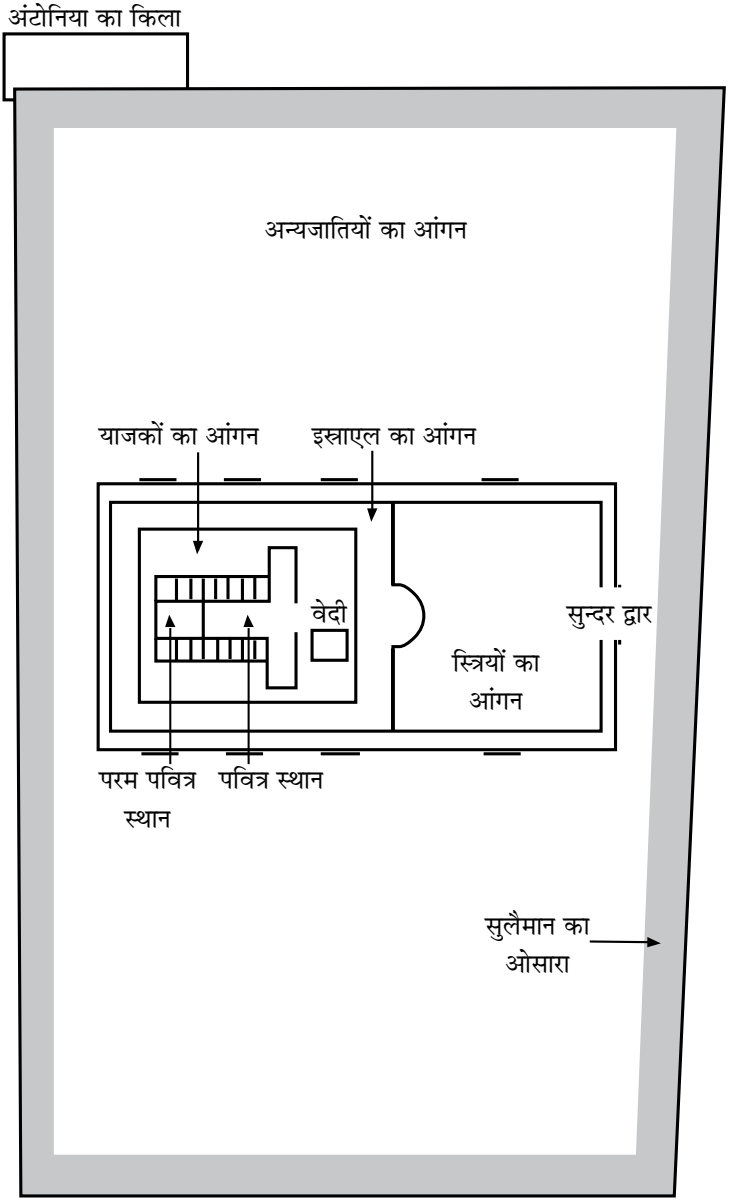
अंटोनिया का किला
अन्यजातियों का आंगन
याजकों का आंगन
इस्राएल का आंगन
वेदी
सुन्दर द्वार
स्त्रियों का आंगन
परम पवित्र स्थान
पवित्र स्थान
सुलैमान का ओसारा

**हेरोदस का मंदिर**